डाक पंजीकरण संख्या : Jaipur City/414/2022-24

RNI No.- RAJHIN/2013/52435

राजस्थान की आवाज ...

हिन्दी मासिक पत्रिका

राजस्थान दर्शन

राजस्थान । गुजरात । महाराष्ट्र से एक साथ प्रसारित

वर्ष 14, अंक -01, जुलाई 2026, मूल्य ₹45/- प्रति, वार्षिक शुल्क ₹540/- प्रति, पृ.सं. 40

राजस्थान को मिली ₹1.05 लाख करोड़ की सौगात

विकसित राजस्थान की ओर बढ़ते कदम ...

SHAMBHU'S®
COFFEE BAR
27 SAAL SE
GUJARAT
KA TRUSTED
COFFEE BRAND
India And Canada
SHAMBHU'S
CORPORATE OFFICE
H.L, Devangan Flats, 1-2, Commerce College Rd,
New Commercial Mills Staff Society, Navrangpura,
Ahmedabad, Gujarat 380006
M : +91 70980 40652 | www.shambhuscoffeebar.com

सम्पादकीय मण्डल

प्रधान संपादक
घीसूसिंह चुण्डावत

संपादक
कमलेश सिंह चुण्डावत

सलाहकार मण्डल
जोगाराम कुमावत (केबीनेट मंत्री)
मदन दिलावर (शिक्षा मंत्री)
अविनाश गहलोत (केबीनेट मंत्री)
गोवर्धनभाई पुरोहित
श्री शम्भुसिंह चौहान
मदन सिंह चौहान
उदयसिंह राजपूत
भूपेन्द्र कुमार प्रजापति
जती भगाबाबा महाराज
नारायणसिंह खुडाला

बिजनेस हेड
भवानी सिंह राजपुरोहित (अहमदाबाद)
राकेश गुप्ता (जयपुर)
अमित कुमार चेचानी
मो. 9099111111
प्रमोद परिहार (सूरत)

एडिटोरियल कंसल्टेंट
राव जागृति सिंह
पुखराज सीरवी, नारलाई

विधि सलाहकार
शीतलप्रसाद राव जयपुर, मांगीलाल सीरवी जयपुर, गणेश बोराणा शिवगंज

डेस्क - दीपक कुमार

डिजाइन - कृपाल सिंह राणावत, गोविन्द सिंह धोनी, हंसराज मीणा

डिस्ट्रीब्यूटर -
विनोद बुक एजेन्सी,
खानपुर, अहमदाबाद।
सूरत बुक स्टॉल, भागल, सूरत,
राजस्थान राव पब्लिकेशन, जयपुर

राजस्थान दर्शन में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनमें संस्थापक-प्रकाशन का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर होगा।

पत्रिका में प्रकाशित किए गए लेखों में फोटो फाइल फोटो है

राजस्थान की आवाज...

राजस्थान दर्शन

राजस्थान । गुजरात । महाराष्ट्र से प्रसारित

हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष : 14 | अंक : 01 | जयपुर, जुलाई 2026 | मूल्य 45/-रुपए प्रति | वार्षिक शुल्क 540/-रुपए प्रति | पृ.सं. 40

देश में वीबी जी राम जी योजना लागू

5

देश की पहली ग्रीनफील्ड रिफाइनरी का उद्घाटन

11

- : सम्पादकीय कार्यालय : -

ए-11, प्रथम मंजिल, करधनी शोपिंग सेन्टर, हरि मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर फोन.: 0141-2521000
E-mail : rajasthandarshanpatrika@gmail.com Website: www.rajasthandarshanpatrika.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी राव संजयसिंह की ओर से मुद्रक नागर प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स, वर्क्स-A/F26, औद्योगिक क्षेत्र, करतारपुरा विस्तार, करतारपुरा, जयपुर (राज.) से मुद्रित एवं A-11, प्रथम मंजिल करधनी शॉपिंग सेन्टर,हरिमार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-17 से प्रकाशित। सम्पादक कमलेशसिंह चुण्डावत, एच-6, नंदपुरी कॉलोनी, मालवीय नगर,जयपुर-17
(पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी)

सम्पर्क : 9166693566, 9413840652, 9588246740

संपादकीय...

वीबी-जी राम जी योजना और देश की पहली ग्रीनफील्ड रिफाइनरी– विकास, ऊर्जा सुरक्षा और आत्मनिर्भर भारत की नई दिशा

भारत आज ऐसे दौर से गुजर रहा है जहाँ आर्थिक विकास, ऊर्जा सुरक्षा और पर्यावरणीय संतुलन को साथ लेकर आगे बढ़ना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता बन गया है। इसी संदर्भ में देश में वीबी-जी राम जी योजना के लागू होने तथा देश की पहली ग्रीनफील्ड रिफाइनरी के उद्घाटन को विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। ये दोनों पहल केवल नई परियोजनाएँ नहीं हैं, बल्कि भारत की दीर्घकालिक आर्थिक रणनीति, औद्योगिक विकास और आत्मनिर्भरता के संकल्प को सशक्त बनाने वाली आधारशिलाएँ हैं। इनसे रोजगार, निवेश, ऊर्जा उत्पादन तथा क्षेत्रीय विकास को नई गति मिलने की संभावना है। भारत विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है। बढ़ती जनसंख्या, औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के कारण ऊर्जा की मांग लगातार बढ़ रही है। वर्तमान में देश अपनी पेट्रोलियम आवश्यकताओं का बड़ा हिस्सा आयात करता है, जिससे विदेशी मुद्रा पर भारी दबाव पड़ता है। ऐसे समय में नई ग्रीनफील्ड रिफाइनरी का निर्माण ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। यह रिफाइनरी आधुनिक तकनीकों से लैस होगी, जिससे ईंधन उत्पादन अधिक कुशल, पर्यावरण के अनुकूल और अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप हो सकेगा।

ग्रीनफील्ड रिफाइनरी का अर्थ है ऐसी नई रिफाइनरी जिसका निर्माण पूरी तरह नए स्थान पर आधुनिक तकनीक के साथ किया जाता है। यह पुरानी इकाइयों के विस्तार से अलग होती है। ऐसी परियोजनाएँ अत्याधुनिक सुरक्षा मानकों, बेहतर ऊर्जा दक्षता तथा प्रदूषण नियंत्रण प्रणालियों से युक्त होती हैं। इससे न केवल उत्पादन क्षमता बढ़ती है, बल्कि कार्बन उत्सर्जन को कम करने में भी सहायता मिलती है। आज जब पूरी दुनिया जलवायु परिवर्तन की चुनौती से जूझ रही है, तब पर्यावरण-अनुकूल औद्योगिक परियोजनाओं का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। दूसरी ओर, वीबी-जी राम जी योजना का उद्देश्य विकास को अधिक समावेशी और जन-केंद्रित बनाना है। यदि इस योजना के माध्यम से आधारभूत ढाँचे का विस्तार, सामाजिक सुरक्षा, ग्रामीण विकास, रोजगार सृजन या औद्योगिक निवेश को बढ़ावा दिया जाता है, तो इसका लाभ समाज के विभिन्न वर्गों तक पहुँचेगा।

किसी भी सरकारी योजना की सफलता केवल उसकी घोषणा में नहीं, बल्कि उसके प्रभावी क्रियान्वयन, पारदर्शिता और जनभागीदारी में निहित होती है। इसलिए आवश्यक है कि योजना का लाभ वास्तव में पात्र लोगों तक पहुँचे तथा उसके कार्यान्वयन की नियमित निगरानी की जाए। इन दोनों पहलों का सबसे बड़ा सकारात्मक प्रभाव रोजगार के क्षेत्र में देखने को मिल सकता है। किसी भी बड़ी रिफाइनरी परियोजना के निर्माण के दौरान हजारों लोगों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार मिलता है। इसके अतिरिक्त परिवहन, लॉजिस्टिक्स, इंजीनियरिंग, निर्माण, होटल, छोटे उद्योग तथा सेवा क्षेत्र में भी आर्थिक गतिविधियाँ बढ़ती हैं। स्थानीय युवाओं के लिए कौशल विकास के नए अवसर उत्पन्न होते हैं और क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलती है। यदि स्थानीय समुदायों को प्राथमिकता देते हुए रोजगार और प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाए, तो इसका सामाजिक प्रभाव और अधिक सकारात्मक होगा।

ऊर्जा सुरक्षा के दृष्टिकोण से भी यह पहल अत्यंत महत्वपूर्ण है। वैश्विक स्तर पर भू-राजनीतिक तनाव, कच्चे तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव तथा आपूर्ति श्रृंखला में आने वाली बाधाएँ कई देशों के लिए चिंता का विषय रही हैं। ऐसे में घरेलू स्तर पर अधिक रिफाइनिंग क्षमता विकसित करने से भारत अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से पूरा कर सकेगा। साथ ही, पेट्रोलियम उत्पादों के निर्यात की संभावनाएँ भी बढ़ेंगी, जिससे विदेशी मुद्रा अर्जित करने में सहायता मिलेगी।

हालाँकि, किसी भी बड़े औद्योगिक परियोजना के साथ कुछ चुनौतियाँ भी जुड़ी होती हैं। भूमि अधिग्रहण, पर्यावरण संरक्षण, स्थानीय समुदायों का पुनर्वास तथा प्राकृतिक संसाधनों का संतुलित उपयोग ऐसे मुद्दे हैं जिन पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। विकास तभी सार्थक माना जाएगा जब वह पर्यावरणीय संवेदनशीलता और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों के अनुरूप हो। सरकार और उद्योगों को यह सुनिश्चित करना होगा कि परियोजनाओं के कारण स्थानीय लोगों के अधिकारों की उपेक्षा न हो तथा पर्यावरणीय नियमों का पूर्ण पालन किया जाए। इसके अतिरिक्त, आज विश्व स्वच्छ ऊर्जा की ओर तेजी से बढ़ रहा है। भारत भी सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, हरित हाइड्रोजन तथा जैव ईंधन जैसे वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों को बढ़ावा दे रहा है। इसलिए नई रिफाइनरी परियोजनाओं को भी भविष्य की ऊर्जा आवश्यकताओं के अनुरूप लचीला और तकनीकी रूप से उन्नत बनाया जाना चाहिए। यदि इन परियोजनाओं में ऊर्जा दक्षता, कार्बन कैप्चर तकनीक और हरित ईंधनों के उत्पादन की संभावनाओं को शामिल किया जाए, तो वे आने वाले दशकों में भी प्रासंगिक बनी रहेंगी।

अंततः, वीबी-जी राम जी योजना और देश की पहली ग्रीनफील्ड रिफाइनरी का उद्घाटन भारत की विकास यात्रा में एक महत्वपूर्ण पड़ाव का प्रतीक है। ये पहलें केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित नहीं हैं, बल्कि आत्मनिर्भर भारत, ऊर्जा सुरक्षा, रोजगार सृजन और आधुनिक औद्योगिक विकास की व्यापक सोच को भी प्रतिबिंबित करती हैं। अब सबसे बड़ी जिम्मेदारी इनके प्रभावी, पारदर्शी और पर्यावरण-अनुकूल क्रियान्वयन की है। यदि सरकार, उद्योग, स्थानीय समुदाय और नागरिक समाज मिलकर इन परियोजनाओं को सफल बनाने में योगदान दें, तो निश्चित ही भारत विकास, समृद्धि और सतत प्रगति के नए अध्याय की ओर अग्रसर होगा। यही किसी भी दूरदर्शी नीति और विकास परियोजना की वास्तविक सफलता होगी।

आपका–
प्रधान संपादक-घीसू सिंह चुण्डावत

मनरेगा अब इतिहास

देश में बीबी राम जी कानून लागू

नए नियम में क्या अलग, किन क्षेत्रों पर असर?

देश में 01 जुलाई से ग्रामीण रोजगार योजना, विकसित भारत गारंटी फॉर रोजगार एंड आजीविका मिशन (ग्रामीण) अधिनियम, 2025 (वीबी जी राम जी कानून) लागू हो गया है। वहीं पुराना मनरेगा कानून इतिहास की बात हो गया है। वीबी जी राम जी कानून के जरिए केंद्र सरकार ग्रामीण अर्थव्यवस्था में बड़े बदलाव करना चाहती है।

क्या है वीबी-जी राम जी कानून

इस कानून के तहत केंद्र सरकार साल 2047 तक एक ग्रामीण विकास ढांचा स्थापित करना चाहती है। इसमें ऐसे ग्रामीण परिवारों के सदस्य, जो अकुशल श्रम कर सकते हैं, उन्हें एक वित्तीय वर्ष में 125 दिनों के रोजगार की गारंटी मिलेगी। इस कानून के तहत ग्रामीण रोजगार के माध्यम से आधारभूत ढांचे को बेहतर किया जाएगा। इस कानून में सरकार ग्रामीणों को सिर्फ रोजगार तक सीमित नहीं रखने की कोशिश कर रही है, बल्कि ऐसा मॉडल बनाने की कोशिश की जा रही है, जिससे गांव के स्तर पर विकास कार्यों की दिशा तय हो।

नए कानून में किन कामों पर होगा फोकस

वीबी जी राम जी कानून के तहत गांवों में विकास कार्यों के लिए चार प्राथमिकताएं तय की गई हैं

1- **जल सुरक्षा :** इसके तहत गांवों में अब जल संरक्षण संरचनाएं, सिंचाई सहायता, भूजल पुनर्भरण, जल निकायों को पुनर्जीवित करने का काम और वनीकरण जैसे कामों को आगे बढ़ाया जाएगा।

2- **ग्रामीण इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास :** वीबी जी राम जी कानून के तहत ग्रामीण सड़कों, सार्वजनिक भवनों, स्कूलों के विकास, स्वच्छता प्रणालियों और सौलर नवीकरणीय ऊर्जा से जुड़े काम और आवास योजनाओं पर जोर रहेगा।

3- **आजीविका से जुड़े काम :** सरकार ने वीबी जी राम जी कानून को कृषि, मत्स्य पालन, भंडारण, बाजार, कौशल विकास से भी जोड़ रही है।

4- **मौसमी घटनाओं से जुड़े काम :** नए कानून में ग्रामीण क्षेत्रों को आपदा के समय तैयार रखने पर भी जोर दिया गया है। इसके लिए कानून में आश्रय स्थल, तटबंध निर्माण, बाढ़ प्रबंधन संरचनाएं, पुनर्वास के काम और जंगलों की आग बुझाने जैसे काम भी शामिल किए गए हैं।

अब 100 नहीं, 125 दिन के रोजगार की गारंटी

सरकार के अनुसार, नए कानून के तहत पात्र ग्रामीण परिवारों को अब 125 दिनों के मजदूरी वाले रोजगार की कानूनी गारंटी मिलेगी। पहले मनरेगा (MGNRE-G) के तहत 100 दिनों के रोजगार की गारंटी थी।

न्यूनतम मजदूरी 300 रुपये तय

सरकार ने नई योजना में 300 रुपये प्रतिदिन की अंतरिम न्यूनतम मजदूरी तय की है। इसका मतलब है कि इस योजना के तहत किसी भी राज्य में मजदूरी 300 रुपये से कम नहीं होगी। सरकार का कहना है कि पूरे देश में मजदूरी दरों में औसतन 10 प्रतिशत से अधिक की बढ़ोतरी की गई है।

मनरेगा से कितना अलग है वीबी-जी राम जी?

केंद्र सरकार का कहना है कि नए नियमों से मनरेगा की ढाचांगत कमियों को दूर किया गया है। सबसे पहले तो योजना के तहत रोजगार के दिनों को 100 से बढ़ाकर 125 दिन किया गया है। इसके अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में किए जाने वाले सभी कार्यों को विकसित भारत राष्ट्रीय ग्रामीण इंफ्रास्ट्रक्चर स्टैक में शामिल किया जाएगा। इस कानून में ग्रामीण स्तर पर सार्वजनिक कार्यों के लिए एक मजबूत और एकीकृत राष्ट्रीय फ्रेमवर्क तैयार होगा। इसी के आधार पर गांवों में आगे के कामों को लेकर तैयारियां होंगी।

इस तरह गांवों के लिए एकीकृत ढांचा तैयार करने से देशभर में उत्पादक, टिकाऊ, सुदृढ़ और बदलाव में सक्षम ग्रामीण परिसंपत्तियों (एसेट्स) का निर्माण सुनिश्चित होगा। केंद्र और राज्य 2047 में विकसित भारत के लक्ष्य के तहत इन परिसंपत्तियों को आगे बढ़ाने की योजनाएं भी साझा तौर पर तैयार करेंगी। यानी एक राष्ट्रीय नीति के तहत काम के बिखराव को समेटा जाएगा और तय दिशा में इसे आगे बढ़ाया जाएगा।

दोनों कानूनों में मुख्य अंतर-

विशेषता	मनरेगा (MGNREGA)	VB-G RAM G
गारंटीकृत रोजगार दिन	प्रत्येक ग्रामीण परिवार को प्रति वित्तीय वर्ष कम-से-कम 100 दिनों के अकुशल मजदूरी रोजगार की गारंटी थी।	रोजगार की अवधि बढ़ाकर 125 दिन कर दी गई है।
वित्तपोषण	मांग-आधारित योजना; अकुशल श्रमिकों की मजदूरी का 100% केंद्र सरकार वहन करती थी।	केंद्र-राज्य व्यय अनुपात 60:40 है। वहीं हिमालयी एवं पूर्वोत्तर राज्यों के लिए ये अनुपात 90:10 है। केंद्र शासित राज्यों में पूरा खर्च केंद्र सरकार वहन करेगी। अगर जरूरत पड़ती है तो अतिरिक्त खर्च राज्य सरकारें वहन करेंगी
कृषि विराम	योजना पूरे वर्ष संचालित रहती थी।	राज्य बुवाई एवं कटाई के मौसम में 60 दिनों तक काम पर अस्थायी रोक घोषित कर सकते हैं।
परिसंपत्ति निर्माण	सामान्य ग्रामीण श्रम एवं बुनियादी विकास कार्यों पर केंद्रित था।	चार प्रमुख विकास क्षेत्रों—जल, कृषि, आपदा प्रबंधन और संपर्क (कनेक्टिविटी)—पर आधारित है।
बजट व्यवस्था	मांग के अनुसार अतिरिक्त धनराशि उपलब्ध कराई जाती थी।	आपूर्ति-आधारित व्यवस्था है, जिसमें राज्यों के लिए निश्चित एवं सीमित बजट निर्धारित होता है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था, राष्ट्रीय विकास योजना से कैसे जुड़ेगी?

मनरेगा कानून के तहत ग्राम पंचायतें ही अपने क्षेत्र में होने वाले विकास कार्यों के लिए जिम्मेदार होतीं थी और वही इससे जुड़ा हर फैसला लेती थीं। वीबी जी राम जी कानून में विकसित ग्राम पंचायत योजना के तहत काम होगा, जिसे ग्राम पंचायतें तैयार करेंगी। इसके बाद इन विकास कार्यों के लिए केंद्र सरकार निचले स्तर से लेकर उच्च स्तर तक जानकारी जुटाएगी, इसके बाद ही कार्यों का आवंटन होगा।

खास बात यह है कि इन ग्राम पंचायत योजनाओं को जीपीएस जैसी तकनीक का इस्तेमाल करके तैयार किया जाएगा और पीएम गति-शक्ति के साथ इस योजना को जोड़ा जाएगा। इससे काम में पारदर्शिता लाने की कोशिश की जाएगी।

वीबी जी राम जी कानून में गवर्नेंस इकोसिस्टम अनिवार्य किया गया है, जिसके तहत मजदूरों के बायोमेट्रिक वेरिफिकेशन, जीपीएस आधारित प्लानिंग और निगरानी, मोबाइल-आधारित रिपोर्टिंग के साथ रियल-टाइम डैशबोर्ड, एआई-सक्षम विश्लेषण और सोशल ऑडिट तंत्र शामिल हैं। इसके अलावा काम की साप्ताहिक जानकारी स्वचालित रूप से तैयार की जाएगी और भौतिक-डिजिटल दोनों पर सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित किए जाएंगे।

राज्य निर्धारित करेंगे क्षेत्रीय विकास के लिए किसे-क्या मिलेगा

वीबी जी राम जी कानून के मुताबिक, वित्तीय संसाधनों का न्यायसंगत वितरण सुनिश्चित करने के लिए राज्यों को नॉर्मेटिव आवंटन (Normative Allocation) का प्रावधान किया गया है। सीधे शब्दों में समझें तो पहले मनरेगा के तहत केंद्र जो फंड्स देता था, उसकी मांग औसतन और संभावित खर्चों के आधार पर होती थी। लेकिन अब केंद्र सरकार ने यह जिम्मेदारी राज्य सरकारों को सौंप दी है। यानी अब राज्य ही वर्ग और स्थानीय विकास जरूरतों को ध्यान में रखते हुए जिलों और ग्राम पंचायतों के बीच फंड का पारदर्शी और आवश्यकतानुसार बंटवारा सुनिश्चित करेंगे।

सरकार, मनरेगा की जगह वीबी जी राम जी कानून क्यों लाई?

दरअसल देश के अधिकतर राज्यों में मनरेगा कानून के दुरुपयोग का पता चला। जिनमें कई जगहों पर काम सिर्फ कागजों पर हुए थे और नियमों का उल्लंघन कर सरकारी पैसे का दुरुपयोग किया गया। कई जगहों पर मजदूरों की बजाय मशीनों से काम कराए गए और पैसे की धांधली की गई। ऐसे में सरकार ने ग्रामीण रोजगार में पारदर्शिता सुनिश्चित करने और इसकी बेहतर निगरानी के लिए वीबी जी राम जी कानून लाने का फैसला किया। यही वजह है कि नए कानून में जीपीएस से निगरानी और रियल टाइम जानकारी और सोशल ऑडिट जैसे प्रावधान किए गए हैं।

VB-G RAM G लागू:

कितनी मिलेगी मजदूरी-पुराने जॉब कार्ड ही चलेंगे या नए बनवाने पड़ेंगे जैसी हर एक चीज यहां

VB-G RAM G Act: सरकार कई तरह की लाभकारी और कल्याणकारी योजनाएं देश में चलाती है ताकि हर जरूरतमंद की मदद की जा सके। इसी क्रम में लोगों को काम देने के लिए काफी पहले से मनरेगा योजना चलाई जा रही है।

पर इस योजना का नाम बदलकर 'वीबी-जी राम जी' (विकसित भारत-गारंटी फॉर रोजगार एंड आजीविका मिशन-ग्रामीण) करने के बाद आज यानी 1 जुलाई 2026 से इसे आधिकारिक तौर पर लागू कर दिया गया है। ऐसे में अगर आपके मन में 'वीबी-जी राम जी' को लेकर कोई सवाल चल रहा है, तो आप उसका जवाब यहां जान सकते हैं...

कितने दिन का रोजगार मिलेगा अब?

- पहले मनरेगा के तहत एक साल के भीतर 100 दिनों के रोजगार की गारंटी थी
- पर अब नया कानून आने से पात्र ग्रामीण परिवारों को 125 दिनों की रोजगार की कानूनी गारंटी मिलेगी

कितनी बढ़ी है रोजाना की मजदूरी?

- सरकार ने नई ग्रामीण रोजगार योजना के तहत मजदूरी दरों में औसतन 28.6 रुपये प्रतिदिन की बढ़ोतरी की है
- ऐसे में अब देश में औसत दैनिक मजदूरी 298.8 रुपये से बढ़कर 327.4 रुपये कर दी गई है
- आप चाहे किसी भी राज्य या केंद्र शासित प्रदेश में रहते हों, आपको तय मजदूरी मिलेगी

यूनतम कितने पैसे मिलेंगे?

- अगर आप भी इस वीबी-जी राम जी योजना से जुड़े हैं, तो आपके लिए सरकार ने 300 रुपये प्रतिदिन की अंतरिम न्यूनतम मजदूरी तय की है
- इसका मतलब है कि इस वीबी-जी राम जी योजना के तहत किसी भी राज्य में मजदूरी 300 रुपये से कम नहीं होगी

क्या बनवाना होगा नया जॉब कार्ड?

- आपके पास जो पुराने जॉब कार्ड हैं फिलहाल वही कार्ड मान्य रहेंगे
- सरकार की तरफ से साफ किया गया है तब तक ई-केवाईसी सत्यापित पुराने जॉब कार्ड तब तक मान्य रहेंगे, जब तक नए ग्रामीण रोजगार गारंटी कार्ड जारी नहीं हो जाते।

इन राज्यों में सबसे ज्यादा बढ़ी मजदूरी

मंत्रालय के अनुसार, 21 राज्यों और प्रशासनिक इकाइयों में मजदूरी को बढ़ाकर सीधे 300 रुपये प्रतिदिन कर दिया गया है। वहीं उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल और असम जैसे राज्यों में मजदूरी दरों में 15 से 25 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी की गई है। सबसे अधिक बढ़ोतरी अरुणाचल प्रदेश और नागालैंड में हुई है, जहां मजदूरी करीब 24.5 प्रतिशत बढ़ाई गई है।

95 हजार करोड़ रुपये से अधिक का बजट

सरकार ने नई व्यवस्था को सुचारु रूप से लागू करने के लिए राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को 95,692.31 करोड़ रुपये की अंतरिम राशि आवंटित की है। इसका उद्देश्य समय पर मजदूरी भुगतान और विकास कार्यों को बिना रुकावट जारी रखना है।

जिन राज्यों में पहले से मजदूरी अधिक थी, वहां भी बढ़ोतरी की गई है। नई अधिसूचना के अनुसार-

हरियाणा- 409 रुपये प्रतिदिन

गोवा- 406 रुपये प्रतिदिन

केरल- 401 रुपये प्रतिदिन

सिक्किम (ऊंचाई वाले ग्राम पंचायत क्षेत्र) - 450 रुपये प्रतिदिन

शिवराज सिंह चौहान ने बताया ऐतिहासिक कदम

केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि सरकार की प्राथमिकता है कि कोई भी पात्र ग्रामीण मजदूर एक भी दिन काम से वंचित न रहे। उन्होंने कहा कि यह कानून विकसित भारत के लक्ष्य को मजबूत करेगा और गांवों की समृद्धि तथा आजीविका सुरक्षा को नई मजबूती देगा।

पुराने जॉब कार्ड फिलहाल रहेंगे मान्य : सरकार ने स्पष्ट किया है कि ई-केवाईसी सत्यापित पुराने जॉब कार्ड तब तक मान्य रहेंगे, जब तक नए ग्रामीण रोजगार गारंटी कार्ड जारी नहीं हो जाते। नई योजना में भी ग्राम पंचायतों की अहम भूमिका बनी रहेगी। योजना के तहत जल संरक्षण, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, कृषि, ग्रामीण आधारभूत ढांचा और महिला सशक्तिकरण से जुड़े कार्यों पर विशेष जोर दिया जाएगा।

देश की पहली ग्रीनफील्ड रिफाइनरी का उद्घाटन

पीमए मोदी ने प्रदेश को दी 1.05 लाख करोड़ से अधिक की सौगाते

21वीं सदी के सबसे बड़े ऊर्जा संकट पर भारत के प्रयास पड़े भारी : मोदी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राजस्थान को 1.05 लाख करोड़ से अधिक योजनाओं और विकास कार्यों की सौगात दी। प्रधानमंत्री ने जोधपुर एयरपोर्ट के नए टर्मिनल भवन का उद्घाटन किया। इसके बाद उन्होंने देश की पहली ग्रीनफील्ड रिफाइनरी-सह-पेट्रोकेमिकल को देश को समर्पित किया। वहीं पीएम मोदी ने जयपुर मेट्रो फेज 2 की नींव भी रखी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को बालोतरा जिले के पचपदरा में एचपीसीएल राजस्थान रिफाइनरी लिमिटेड को राष्ट्र को समर्पित किया। करीब 79,459 करोड़ रुपए की लागत से तैयार यह परियोजना केवल राजस्थान की पहली रिफाइनरी नहीं है, बल्कि देश की पहली ग्रीनफील्ड रिफाइनरी-सह-पेट्रोकेमिकल कॉम्प्लेक्स भी है। इस दौरान प्रधानमंत्री ने रिफाइनरी कंट्रोल रूम में जाकर पूरी तकनीक की जानकारी भी कर्मचारियों से ली। राजस्थान रिफाइनरी का लोकार्पण करते हुए पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि राजस्थान की इस धरती से भारत ने आत्मनिर्भर होने की दिशा में बहुत बड़ा कदम उठाया है। ये रिफाइनरी यहां हजारों लोगों के रोजगार का माध्यम बनेगी। आज का दिन साक्षी है कि बीजेपी सरकारें परियोजनाओं को सिर्फ केवल शिलान्यास करके नहीं छोड़ती, हम उन परियोजनाओं को पूरा करने के लिए दिन-रात एक कर देते हैं। दो महीने पहले यहां जो हादसा हुआ, उसके बाद इतनी तेजी से काम पूरा कर लेना परिश्रम की परिकाष्ठा का उदाहरण है। नया भारत अपने संकल्प से न पीछे हटता है और न ही अपनी रफ्तार कम करता है।

तेल संकट पर भारत के प्रयास पड़े भारी

उन्होंने तेल का संकट का जिक्र करते हुए कहा कि पश्चिमी एशिया में युद्ध की वजह से पूरी दुनिया हाहाकार मचा है। हर देश त्रस्त है, इस युद्ध ने 21वीं सदी के सबसे बड़े ऊर्जा संकट को जन्म दिया। बड़े-बड़े देश आज ईंधन की किल्लत से जूझ रहे हैं, 21वीं सदी के सबसे ऊर्जा संकट पर भारत के प्रयास भारी पड़े हैं।

भारत ने हर स्तर पर सही फैसले लिए। संकट का समय रहते सटीक आकलन किया, प्रभावी रणनीति बनाई। भारत के संसाधनों का सही प्रयोग किया, तब जाकर भारत संकट से ऊबर पाया है। जब सार्वजनिक तौर पर कुछ ताकतें अफवाह और आशंका फैलाने में व्यस्त थी तब देश में दिन-रात काम हो रहा था, किस तरह स्थिति को संभाला जा रहा था, वो प्रयास, धैर्य, नीतिगत, कूटनीतिक स्तर पर उठाए गए एक-एक संवेदनशील कदम अभूतपूर्व है।

पीएम ने कहा कि तेल सप्लाई की कोई बड़ी चुनौती नहीं आई। युद्ध के समय भारत के दूसरे देशों के साथ जो दोस्ती है वो काम आ गई। संकट शुरू होने से पहले भारत 25-26 देशों से ईंधन आयात करता था, लेकिन संकट के समय भारत की डिप्लोमेसी का जलवा दिखा, हमारे अच्छे संबंध दूसरे देशों के साथ काम आए। भारत युद्ध के दौरान 40 से अधिक देशों से ईंधन मंगवाने लगा। दुनिया को स्पष्ट संदेश दिया कि हमारे लिए राष्ट्र और राष्ट्र के नागरिकों का हित पहले है। इस चुनौती से देश ऐसे ही नहीं उबरा, इसके पीछे हमारी एक दशक से चल रही दूरदर्शिता मुख्य है.

जनता पर भार नहीं पड़ने दिया : प्रधानमंत्री

पीएम ने कहा कि एलपीजी के घरेलू उपभोक्ताओं पर ज्यादा बोझ नहीं पड़ने दिया, जो हालात थे उसमें घरेलू गैस की कीमत दो हजार तक जा सकती थी। रसोई गैस के विषय में हम सभी जानते हैं कि हमारी जरूरतों की 60 फीसदी एलपीजी दूसरे देशों से आयात होती है। इसमें से 90 प्रतिशत एलपीजी गल्फ देशों से आ रही थी, होर्मुज होते हुए. अचानत उत्पन्न हुई संकट ने उस सप्लाई को बंद कर दिया, लेकिन राजस्थान की इस धरती ने हमें चुनौतियों को भी चैलेंज देना सिखाया है। हमने संकट शुरू होते ही रिफाइनरी के सामर्थ्य पर काम किया। तीन महीनों के भीतर एलपीजी के उत्पादन की बढ़ोतरी हुई, पहले 35 हजार मेट्रिक टन उत्पादन होता था, वो बढ़कर 54 हजार मेट्रिक टन हो गया। रसोई गैस का पूरा लोड एलपीजी पर न पड़े, इसका भी ध्यान रखा, पीएनजी गैस कनेक्शन का अभियान चलाया गया। बहुत कम समय में 11 लाख कनेक्शन पीएनजी से जोड़ दिया गया। घरेलू उपभोक्ताओं पर बहुत बोझ भी नहीं पड़ने दिया। हमारे यहां अभी भी घरेलू सिलेंडर 950 रुपए से कम में दिया जा रहा है। उज्जवला तो 650 में आ रहा हैं। उन्होंने कहा कि दो दिन पहले सरकार ने कर्मिशल सलेंडर की कीमत में भी कमी की है। यह हमारी सरकार की संवदेनशीलता है। युद्ध की वजह से पेट्रोल-डिजल का संकट बहुत बड़ा था। क्रूड आयल की कीमतें 120 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच गई थी। दुनिया के कई देशों में 40 से पचास फीसदी तक भाव बढ़े। भारत में एक दिन भी ऐसे हालात नहीं बने कि कोटे से तेल मिले. उन्होंने कहा कि अफवाहें बहुत फैलाई गई, लोगों का डराया गया। राजनीति के खेल खेले गए, लेकिन जिनके इरादे गलत थे, वे सफल नहीं हो पाए। दूर दराज में थोड़ी चुनौति के अलावा कोई परेशानी नहीं आई। उन्होंने कहा कि दो माह में 75 हजार करोड़ का घाटा कंपनियों ने उठाया, इसकी जिम्मेदारी सरकार ने उठाई। इतने घाटे से एक रिफाइनरी बन सकती हैं, लेकिन हमने ज्यादा बोझ जनता पर नहीं पड़ने दिया।

भारत की क्षमता बढ़ी, यूरोप की घट रही है

पीएम मोदी ने कहा कि 50 साल से अमेरिरका में कोई नई रिफाइनरी नहीं बनी हैं। यूरोप में रिफाइनरी की क्षमता गिर रही हैं, लेकिन 2030 तक हमारा देश की 270 मिट्रिक टन की क्षमता 300 पार कर जाएगी। यह हमारे देश की 24वीं रिफाइनरी हैं। यह आत्मनिर्भर भारत की ओर बड़ा कदम है। पीएम मोदी ने कहा कि होर्मुज के बंद होने से दुनिया भर में सप्लाई बाधित हुई, हमारे यहां पेट्रोल पंप ड्राइ नहीं हुए। पीएम ने कहा कि कठिन लगने वाले संकट भी सिद्ध हो जाते हैं, अगर नीयत साफ हो, हम वर्तमान में दुनिया की चौथी रिफाइनरी की क्षमता वाला देश हैं, यह आने वाले समय में और बढ़ेगी।

राजस्थान के लिए रिफाइनरी ऐतिहासिक उपलब्धि : बागडे

राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागडे ने शनिवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा बालोतरा जिले के पचपदरा में पहली ग्रीनफील्ड इंटीग्रेटेड रिफाइनरी और जयपुर मैट्रो दूसरे चरण तथा अन्य विकास योजनों को राष्ट्र को समर्पित करने के कार्यक्रम में भागीदारी की। बागडे ने इस अवसर पर कहा कि मोदी द्वारा राजस्थान के लिए दी गई यह ऐतिहासिक सौगात है। उन्होंने इसके लिए प्रदेशवासियों की ओर से प्रधानमंत्री के प्रति आभार जताया।

हर व्यक्ति तक जनहितकारी योजनाओं का लाभ पहुंचा रही डबल इंजन सरकार : सीएम भजनलाल शर्मा

पीएम नरेंद्र मोदी ने वर्चुअली रखी जयपुर मेट्रो फेज 2 की नींव

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को पचपदरा से एचपीसीएल राजस्थान रिफाइनरी को राष्ट्र को समर्पण किया। इसी कार्यक्रम में उन्होंने जयपुर मेट्रो फेज-2 के निर्माण कार्य की वचुर्अली आधारशिला रखी। जयपुर के एसएमएस इंडोर स्टेडियम में एलईडी स्क्रीन के माध्यम से लाइव स्क्रीनिंग की गई। कार्यक्रम में पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने युवाओं को नियुक्ति पत्र भी दिए और स्टेडियम में मौजूद बड़ी संख्या में लोगों के साथ प्रधानमंत्री का संबोधन सुना। इस दौरान वसुंधरा राजे ने पीएम मोदी का प्रदेशवासियों की ओर से इन सौगातों के लिए आभार जताते हुए कहा कि ये प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हैं जो कार्य शुरू करते हैं, उसे पूरा भी करते हैं।

53 हजार युवाओं को नियुक्ति पत्र

जयपुर में हुए कार्यक्रम में पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे, यूडीएच मंत्री झाबर सिंह खर्रा, जयपुर शहर सांसद मंजू शर्मा, विधायक गोपाल शर्मा, कालीचरण सर्राफ सहित कई जनप्रतिनिधि मौजूद रहे. विभिन्न विभागों में चयनित युवाओं को नियुक्ति पत्र भी वितरित किए गए. प्रदेशभर में करीब 53 हजार युवाओं को नियुक्ति पत्र दिए गए, जबकि जयपुर जिले में 5,664 युवाओं को रोजगार का अवसर मिला। इस अवसर पर पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह राजस्थान के लिए ऐतिहासिक दिन है।

41 किलोमीटर लंबी मेट्रो लाइन: राजे ने कहा कि 13,037 करोड़ रुपए की लागत से बनने वाली लगभग 41 किलोमीटर लंबी मेट्रो लाइन शहर के सार्वजनिक परिवहन तंत्र को मजबूत करेगी और लाखों लोगों को बेहतर आवागमन की सुविधा मिलेगी। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार के सहयोग से राजस्थान में लगातार बड़ी विकास परियोजनाएं साकार हो रही हैं। रिफाइनरी, मेट्रो और एयरपोर्ट जैसी परियोजनाएं केवल आधारभूत ढांचे का विस्तार नहीं हैं, बल्कि रोजगार, निवेश और आर्थिक गतिविधियों को भी नई गति देंगी। उन्होंने विश्वास जताया कि इन परियोजनाओं का लाभ आने वाले वर्षों में पूरे प्रदेश को मिलेगा।

जब भी राजस्थान ने कोई सपना देखा, मोदी ने उसे किया साकार : वसुन्धरा

राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे ने आज शनिवार के दिन को राज्य के लिए सौगात दिवस बताते हुए कहा है कि जब भी राजस्थान ने कोई सपना देखा, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उसे साकार किया हैं। राजे ने यहां जयपुर के एसएमएस स्टेडियम इंडोर हॉल में जयपुर मेट्रो द्वितीय फेज के वर्चुअल शिलान्यास कार्यक्रम को संबोधित किया। इस अवसर पर उन्होंने नव नियुक्त युवाओं को नियुक्ति पत्र वितरित किए। उन्होंने कहा कि मोदी ने शनिवार का दिन राजस्थान के लिए सौगात दिवस बना दिया। जब भी राजस्थान ने कोई सपना देखा,मोदीजी ने साकार किया। श्री मोदी ने 16 जनवरी 2018 को रिफाइनरी कार्य का शुभारंभ किया और उन्होंने ही इसका उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि उनके नेतृत्व में 03 जून,2015 को जयपुर की पहली मेट्रो शुरू हुई। उन्होंने ही मेट्रो द्वितीय चरण की नींव रखकर 'विकसित भारत-विकसित राजस्थान' की कल्पना को आगे बढ़ाया।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि लगातार तीसरी बार देश की जनता का विश्वास प्राप्त कर सबसे लंबे समय तक निर्वाचित प्रधानमंत्री के रूप में नया इतिहास रचने वाले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश पिछले 12 वर्षों से विकास, सुशासन और जनकल्याण के नए प्रतिमान स्थापित कर रहा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में डबल इंजन सरकार राजस्थान के प्रत्येक नागरिक तक जनहितकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाने के लिए संकल्प एवं समर्पण के साथ कार्य कर रही है।

उन्होंने कहा कि लगभग 80 हजार करोड़ रुपए की लागत से निर्मित रिफाइनरी राजस्थान की भाग्यरेखा के साथ-साथ पूरे देश के औद्योगिक एवं आर्थिक विकास का नया आधार बनेगी। यह परियोजना प्रदेश के समग्र विकास का ग्रोथ इंजन सिद्ध होगी और पश्चिमी राजस्थान को पेट्रोकेमिकल उद्योगों का प्रमुख हब बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

इसके माध्यम से नए उद्योगों के निवेश को गति मिलेगी, स्थानीय अर्थव्यवस्था सशक्त होगी, क्षेत्र में समृद्धि और खुशहाली आएगी तथा लाखों युवाओं के लिए प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार के व्यापक अवसर सृजित होंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि 13 हजार करोड़ रुपए से अधिक की लागत वाली जयपुर मेट्रो फेज-2 परियोजना राजधानी की यातायात व्यवस्था को आधुनिक और सुगम बनाएगी। इससे ट्रैफिक जाम की समस्या का समधान होगा, सार्वजनिक परिवहन को मजबूती मिलेगी तथा जयपुर के शहरी विकास को नई दिशा प्राप्त होगी।

उन्होंने कहा कि डबल इंजन सरकार ने ढाई वर्ष के कार्यकाल में युवाओं के लिए रोजगार सृजन के क्षेत्र में अभूतपूर्व उपलब्धि हासिल की है। इस अवधि में 1 लाख 78 हजार सरकारी नौकरियां प्रदान की गई हैं। उन्होंने कहा कि राजस्थान के इतिहास में इतने कम समय में इतनी बड़ी संख्या में सरकारी नौकरियां उपलब्ध कराना एक नया रिकॉर्ड है। इसके साथ ही निजी क्षेत्र में भी सरकार के प्रयासों से 4 लाख से अधिक युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराया गया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ यमुना जल समझौता राजस्थान के जल इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है। इस ऐतिहासिक समझौते से शेखावाटी अंचल सहित जल संकट से जूझ रहे क्षेत्रों के लगभग 75 लाख लोगों को दीर्घकालिक पेयजल राहत मिलेगी। उन्होंने कहा कि यह केवल एक जल परियोजना नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के सुरक्षित भविष्य, क्षेत्रीय विकास और समृद्ध राजस्थान की मजबूत नींव है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जोधपुर एयरपोर्ट के नए टर्मिनल भवन का किया उद्घाटन

संशोधित उड़ान योजना का प्रधानमंत्री ने किया शुभारंभ, एयर कनेक्टिविटी के नए युग की होगी शुरूआत

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को जोधपुर एयरपोर्ट के नए टर्मिनल भवन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने संशोधित उड़ान योजना का भी शुभारंभ किया। कार्यक्रम में राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागडे, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, केन्द्रीय नागर विमानन मंत्री किंजरापु राममोहन नायडू, केन्द्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, केन्द्रीय नागर विमानन राज्यमंत्री मुरलीधर मोहोल, मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण एवं अधिकारीगण उपस्थित रहे।

राजस्थान की समृद्ध विरासत के साथ विकास की झलक

उल्लेखनीय है कि 480 करोड़ रुपए की लागत से विकसित जोधपुर एयरपोर्ट का नया टर्मिनल 23 हजार वर्ग मीटर से अधिक क्षेत्र में फैला है तथा इसकी प्रतिवर्ष यात्री क्षमता 20 लाख है। राजस्थान की समृद्ध विरासत से प्रेरित वास्तुकला से निर्मित यह टर्मिनल भवन अत्याधुनिक यात्री सुविधाओं से सुसज्जित है। साथ ही, ऊर्जा दक्षता, जल संरक्षण और हरित भवन निर्माण पद्धतियों जैसी विशेषताओं के साथ सतत विकास टर्मिनल के डिजाइन के अभिन्न अंग हैं। नए टर्मिनल भवन के उद्घाटन से बेहतर एयर कनेक्टिविटी के साथ ही पश्चिमी राजस्थान में पर्यटन, व्यापार और रोजगार के अवसरों में वृद्धि होगी।

'उड़े देश का आम नागरिक' के विजन को मिल रही मजबूती

प्रधानमंत्री द्वारा 'उड़े देश का आम नागरिक' के विजन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रारंभ की गई संशोधित उड़ान योजना में रीजनल एयर कनेक्टिविटी पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इस योजना के तहत 28 हजार 840 करोड़ रुपये के आवंटन से अगले 10 वर्षों में विमानन आधारित विकास को गति दी जाएगी। इससे देश भर में व्यापक और स्थायी कनेक्टिविटी सुनिश्चित होगी तथा भारतीय विमानन क्षेत्र को बड़ा प्रोत्साहन मिलेगा।

100 हवाई अड्डों के विकास पर जोर

उल्लेखनीय है कि संशोधित उड़ान योजना के तहत देश भर में विमानन अवसंरचना के विस्तार के लिए मौजूदा अप्रयुक्त हवाई पट्टियों से 100 हवाई अड्डों के विकास पर विशेष बल दिया गया है। साथ ही, दूरस्थ और दुर्गम क्षेत्रों में पहुंच संबंधी चुनौतियों से निपटने के लिए योजना में 200 आधुनिक हेलीपैड का विकास भी प्रस्तावित है। इस योजना के तहत एयरलाइन कंपनियों को 10 हजार करोड़ रुपये से अधिक की वायबिलिटी गैप फंडिंग सहायता जारी रखी जाएगी, जिससे क्षेत्रीय परिचालन की निरंतरता सुनिश्चित हो सकेगी।

पेट्रोल-डीजल 90 लाख MTA क्षमता वाली राजस्थान की इसी रिफाइनरी से निकलेगा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को राजस्थान के बालोतरा ज़िले के पचपदरा में देश के पहले 'ग्रीनफील्ड इंटीग्रेटेड रिफाइनरी-कम-पेट्रोकेमिकल कॉम्प्लेक्स' का उद्घाटन किया। 79,450 करोड़ से ज़्यादा के भारी निवेश से तैयार यह प्रोजेक्ट भारत के एनर्जी और पेट्रोकेमिकल सेक्टर के लिए एक ऐतिहासिक मील का पत्थर है।

हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (HPCL) और राजस्थान सरकार के बीच इस जॉइंट वेंचर को सिर्फ एक रिफाइनरी के तौर पर नहीं, बल्कि भविष्य की आर्थिक तरक्की के लिए एक पावरहाउस के तौर पर देखा जा रहा है। आइए, इसकी जबरदस्त संभावनाओं और इससे मिलने वाले अहम फायदों के बारे में जानें।

शानदार रिफाइनरी क्षमता

यह अत्याधुनिक कॉम्प्लेक्स रिफ़ाइनिंग और पेट्रोकेमिकल प्रोडक्शन, दोनों को एक साथ करता है। इसकी तकनीकी क्षमताएं इसे ग्लोबल स्तर पर अलग बनाती हैं। इस प्लांट में सालाना 9 मिलियन मीट्रिक टन (9 MMTPA) कच्चा तेल रिफाइन करने की क्षमता है, जबकि इसकी पेट्रोकेमिकल प्रोडक्शन क्षमता 2.4 MMTPA है। इस रिफाइनरी का नेल्सन कॉम्प्लेक्सिटी इंडेक्स 17.0 है, जो यह बताता है कि यह दुनिया की सबसे जटिल और आधुनिक रिफाइनरियों में से एक है। इसका पेट्रोकेमिकल यील्ड 26% से ज़्यादा है। यह दक्षता और स्थिरता के मामले में वैश्विक मानकों को पूरी तरह से पूरा करती है। इस रिफ़ाइनरी से देश और आम जनता को काफी फायदा हो सकता है।

इस बड़े प्रोजेक्ट का असर सिर्फ राजस्थान तक ही सीमित नहीं रहेगा; इससे देश की अर्थव्यवस्था को भी नई रफ्तार मिलेगी। यह कॉम्प्लेक्स भारत की ऊर्जा सुरक्षा को मज़बूत करेगा और पेट्रोकेमिकल उत्पादों के लिए दूसरे देशों पर हमारी निर्भरता को काफी हद तक कम करेगा।

यह रिफाइनरी एक 'एंकर इंडस्ट्री' के तौर पर काम करेगी। इसके आस-पास पेट्रोकेमिकल और प्लास्टिक पार्क विकसित किए जाएंगे, जिससे डाउनस्ट्रीम उद्योगों और कई सहायक कंपनियों को सीधे फायदा होगा।

लोगों के लिए रोजगार के अवसर

यह प्रोजेक्ट और इसके आस-पास विकसित हो रहे उद्योग हज़ारों नई नौकरियां पैदा करेंगे, जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों तरह की होंगी। इससे न केवल स्थानीय युवाओं को रोज़गार मिलेगा, बल्कि पूरे क्षेत्र का सामाजिक और आर्थिक विकास भी होगा।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के अथक प्रयासों से 20 वर्ष बाद सिंचाई के लिए खोला गया पांचना बांध का पानी

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के अथक प्रयासों एवं राज्य सरकार की सकारात्मक पहल से 20 वर्ष बाद सोमवार को पांचना बांध से सिंचाई के लिए जल प्रवाह प्रारंभ किया गया। हालांकि, जल प्रवाह के दौरान अचानक आई एक तकनीकी खामी के कारण कमांड क्षेत्र की नहरों में पानी निर्धारित समय पर नहीं पहुंच सका।

स्थिति की जानकारी मिलते ही जिला प्रशासन ने तत्काल संज्ञान लेते हुए जल संसाधन विभाग एवं एसडीआरएफ की तकनीकी टीमों को मौके पर लगाया। विशेषज्ञों द्वारा युद्ध स्तर पर तकनीकी खामी को दूर करने का कार्य लगातार किया जा रहा है।

जल संसाधन विभाग के अधिकारियों ने बताया कि तकनीकी टीम समस्या का पूर्ण समाधान होने तक निरंतर कार्य करती रहेगी। तकनीकी खामी दूर होते ही देर रात तक कमांड क्षेत्र की नहरों में जल प्रवाह पुन: प्रारंभ कर दिया जाएगा।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने आमजन से शांति, सौहार्द एवं आपसी सद्भाव बनाए रखने की अपील करते हुए कहा है कि राज्य सरकार किसानों के हितों के प्रति पूर्णत: संवेदनशील है तथा सिंचाई व्यवस्था को शीघ्र सुचारु करने के लिए सभी आवश्यक प्रयास किए जा रहे हैं।

जिला प्रशासन ने भी किसानों से धैर्य बनाए रखने का आग्रह करते हुए विश्वास दिलाया है कि तकनीकी समस्या का शीघ्र समाधान कर सिंचाई जल उपलब्ध कराया जाएगा। मुख्यमंत्री के निर्देशन में संबंधित विभागों द्वारा स्थिति की निरंतर निगरानी की जा रही है।

स्थिति की प्रभावी मॉनिटरिंग एवं तकनीकी कार्यों की निगरानी के लिए ग्रामीण विकास विभाग के शासन सचिव कृष्ण कुणाल, भरतपुर रेंज के महानिरीक्षक कैलाश चंद बिश्नोई, संभागीय आयुक्त नलिनी कठोतिया, मुख्य अभियंता जल संसाधन विभाग भुवन भास्कर, जिला कलक्टर करौली अक्षय गोदारा, जिला कलक्टर सवाई माधोपुर कानाराम, पुलिस अधीक्षक करौली लोकेश सोनवाल सहित जल संसाधन विभाग के अधिकारी, कर्मचारी, संवेदक एवं एसडीआरएफ की टीमें मौके पर मौजूद रहकर राहत एवं तकनीकी कार्यों में जुटी हुई हैं।

17 मानसून में भारत में घूमने के लिए सर्वोत्तम स्थान...
18 गोवा, केरल, स्पीति घाटी, कोडईकनाल...
19 लद्दाख, माउंट आबू, ऊटी, चेरापूंजी
20 शिलांग, उदयपुर, तवांग, धर्मशाला....

पर्यटन

मानसून भारत में घूमने के लिए सर्वोत्तम स्थान

जुलाई साल का वह महीना है जो मानसून की शुरुआत और गर्मियों के लगभग अंत का प्रतीक है। यह वह मौसम है जब आप वास्तव में सबसे अच्छे मौसम और शानदार परिदृश्य का अनुभव करने के लिए अपना बैग पैक कर सकते हैं। यह वह समय है जब कई गंतव्य हैं जो अपने सबसे अच्छे रूप में हैं और साथ ही आप जुलाई में घूमने के लिए भारत के सर्वश्रेष्ठ स्थानों पर विभिन्न गतिविधियों का भी आनंद ले सकते हैं। हालांकि, ऐसे लोगों की एक श्रेणी है जो आमतौर पर बिस्तर में लेटना और चाय/कॉफी के गर्म कप का आनंद लेना पसंद करते हैं और अपने प्रियजनों के साथ एक निजी स्थान पर लुभावने वातावरण में कुछ गुणवत्तापूर्ण समय बिताना पसंद करते हैं। इसलिए, हमारे पास इस श्रेणी के लिए भी एक समाधान है क्योंकि कई शानदार रिसॉर्ट हैं जो मंत्रमुग्ध करने वाले स्थलों पर सर्वश्रेष्ठ प्रवास प्रदान करते हैं जिन्हें जुलाई में निश्चित रूप से देखना चाहिए।

लद्दाख

यह भारत के उत्तरी छोर पर स्थित एक और अद्भुत गंतव्य है और निस्संदेह जुलाई में घूमने के लिए भारत में सबसे अच्छी जगहों में से एक है। इस महीने के दौरान, मौसम अच्छा होता है और लद्दाख के बेहतरीन नज़ारे देखने को मिलते हैं। यह मनमोहक गंतव्य अपने शानदार परिदृश्य और ट्रेकिंग, रिवर राफ्टिंग और माउंटेन पास राइडिंग जैसी गतिविधियों के लिए जाना जाता है। मानसून के मौसम में रिवर राफ्टिंग लद्दाख में सबसे लोकप्रिय गतिविधियों में से एक है, क्योंकि बारिश बहुत ज़्यादा नहीं होती है और ट्रेकिंग ट्रेल भी खुले रहते हैं।

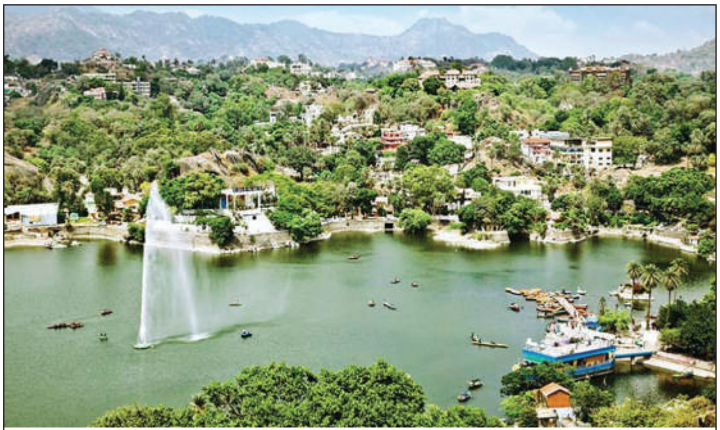

माउंट आबू

माउंट आबू राजस्थान का एक प्रसिद्ध हिल स्टेशन है और यह राजस्थान में वर्षा प्राप्त करने वाला एकमात्र स्थान है। जुलाई में माउंट आबू की यात्रा के दौरान पर्यटक कई आकर्षण देख सकते हैं। जुलाई महीने में घूमने के लिए कुछ प्रसिद्ध आकर्षण हैं दिलवाड़ा जैन मंदिर, माउंट आबू का वन्यजीव अभयारण्य, अचलगढ़, गुरु शिकार, ट्रेवर टैंक और आबू रोड आदि।

ऊटी

ऊटी प्रकृति प्रेमियों के लिए एक सच्चा आश्रय स्थल है और यदि आप जुलाई में ऊटी जाने की योजना बना रहे हैं और मजा दोगुना करना चाहते हैं, तो कोयंबटूर पहुंचें और ऊटी के लिए टॉय ट्रेन लें। यह एक अनोखा अनुभव है और साथ ही मंत्रमुग्ध कर देने वाला दृश्य भी प्रस्तुत करता है। जुलाई के महीने में, इस गंतव्य में गर्म दोपहरें, धुंधली सुबह के साथ हल्की बारिश और ठंडे मौसम के साथ कोहरे वाली रातें होती हैं। यह गंतव्य 'हिल स्टेशनों की रानी' के रूप में प्रसिद्ध है और जुलाई में घूमने के लिए तमिलनाडु के सबसे अच्छे हिल स्टेशनों में से एक है। इस गंतव्य के कुछ शीर्ष आकर्षण ऊटी झील, डोडाबेट्टा, एवलांच झील, रोज़ गार्डन, मुकुर्ती राष्ट्रीय उद्यान, स्टोन हाउस, एमराल्ड झील और कामराज सागर बांध आदि हैं।

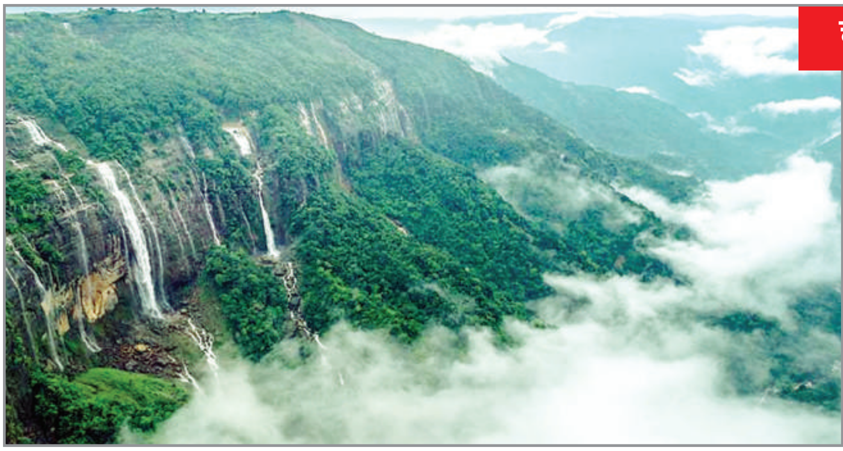

चेरापूंजी

चेरापूंजी एक लोकप्रिय गंतव्य है और दुनिया का दूसरा सबसे अधिक बारिश वाला गंतव्य होने के लिए प्रसिद्ध है।

यह अद्भुत गंतव्य मेघालय में स्थित है और यहाँ साल के सभी 12 महीनों में भारी बारिश होती है। रोमांच के शौकीन और ट्रैकिंग के शौकीन लोगों को जुलाई में चेरापूंजी ज़रूर जाना चाहिए।

इस गंतव्य पर आने वाले पर्यटक चाय के बागानों का भी पता लगा सकते हैं, सुंदर सड़कों पर ड्राइविंग का आनंद ले सकते हैं, पेड़ों के पुलों से होकर चल सकते हैं आदि।

गोवा

समुद्र तट और बारिश की कल्पना एक साथ, मन को झकझोर देने वाली है। जी हाँ, मानसून समुद्र तट की छुट्टियों में चमत्कार कर सकता है और गोवा में 30 से ज़्यादा समुद्र तट हैं जो इसे और भी दिलचस्प बनाते हैं क्योंकि आपके पास घूमने के लिए ज़्यादा विकल्प होंगे। जुलाई में गोवा आने वाले पर्यटक दूधसागर फॉल्स, मोलेम नेशनल पार्क, वन्यजीव अभयारण्य जैसे आकर्षणों को देख सकते हैं और मंडोवी नदी पर बोअर क्रूज का भी मजा ले सकते हैं। इसलिए, अगर आप शानदार समुद्र तटों वाली जगह पर जाना चाहते हैं तो गोवा घूमने की योजना बनाएँ। यह जुलाई में घूमने के लिए सबसे अच्छी जगहों में से एक है।

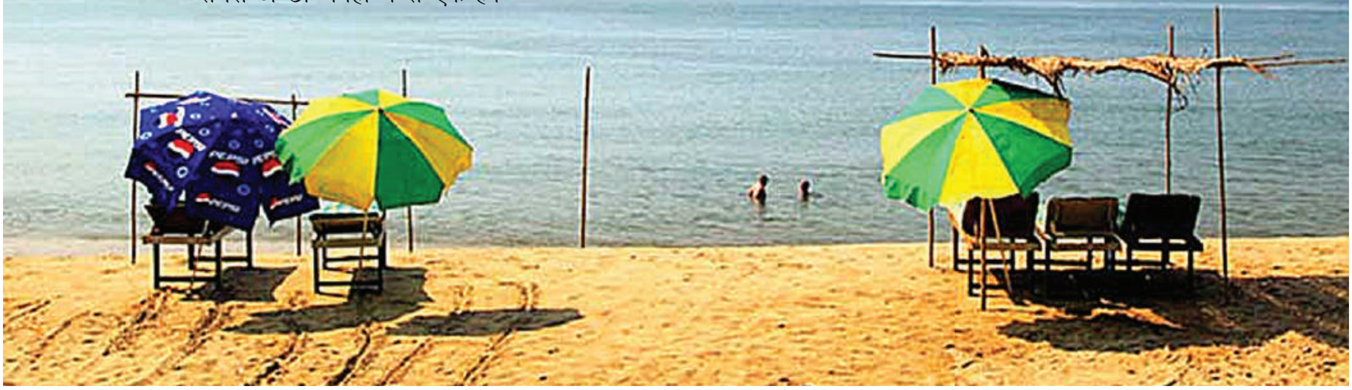

केरल

भारत में यह गंतव्य दक्षिण भारत में जुलाई में घूमने के लिए एक और जरूरी जगह है। केरल ऑफ सीजन में एक सच्चा स्वर्ग है क्योंकि यह जगह जुलाई के महीने में सबसे बेहतरीन अनुभव देती है। मानसून के दौरान बैकवाटर और झीलें पानी से भर जाती हैं और इसलिए वे सभी प्रकार के साहसिक खेलों की पेशकश करने के लिए एकदम सही हैं।

इसके अलावा, अगर आपको रोमांच पसंद नहीं है तो आप अल्लापुझा के पानी पर क्लासिक बैकवाटर क्रूज और आयुर्वेदिक मालिश का आनंद ले सकते हैं।

स्पीति घाटी

यह गंतव्य रोमांच पसंद करने वाले लोगों के बीच सबसे ज्यादा पसंद की जाने वाली जगहों में से एक है। शानदार पहाड़ों और ग्लेशियर से घिरी स्पीति घाटी शांत और शांतिपूर्ण रहने का विकल्प प्रदान करती है। अगर आप समृद्ध बौद्ध संस्कृति का अनुभव करना चाहते हैं और खूबसूरत गांवों या आध्यात्मिक मठों में रहना चाहते हैं तो यह भारत में जुलाई में घूमने के लिए सबसे अच्छी जगहों में से एक है। यहाँ की कुछ प्रसिद्ध जगहें हैं की मठ, बारा शिगरी ग्लेशियर और ताबो मठ।

कोडईकनाल

कोडईकनाल दक्षिण भारत का एक और शानदार पर्यटन स्थल है। जुलाई में दक्षिण भारत में यह एक और ज़रूर घूमने लायक जगह है। इस शानदार हिल स्टेशन को तमिलनाडु के सभी हिल स्टेशनों की राजकुमारी माना जाता है और यह सुहावना और धुंध भरा मौसम प्रदान करता है। जुलाई में कोडईकनाल आने वाले पर्यटक कोडई झील, बेरीजम झील, बियर शोल फॉल्स, पलानी हिल्स, ग्रीन वैली व्यू और प्लांटेशन आदि जैसे कुछ प्रसिद्ध दर्शनीय स्थलों की यात्रा कर सकते हैं। यह भारत में जुलाई में घूमने के लिए सबसे अच्छी जगहों में से एक है क्योंकि यह कोडईकनाल में एडवेंचर वेकेशन की तलाश करने वालों के लिए सही मौसम है।

शिलांग

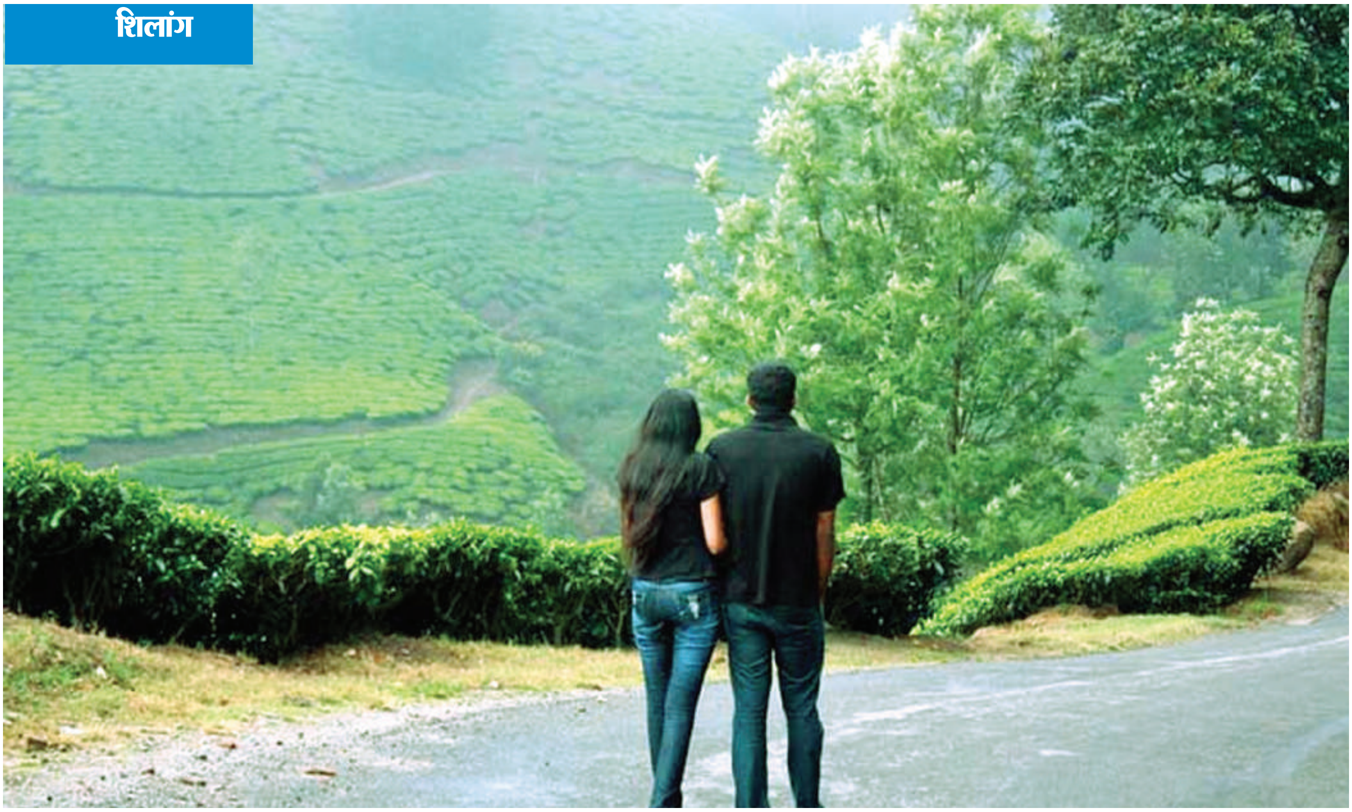

शिलांग को प्यार से पूर्व का स्कॉटलैंड कहा जाता है और यह मेघालय में स्थित है। यह उन जगहों में से एक है जो हर साल बहुत से यात्रा के शौकीनों को आकर्षित करती है, खासकर मानसून के मौसम में और इसलिए यह जुलाई में घूमने के लिए सबसे अच्छी जगहों में से एक है। जुलाई में शिलांग आने वाले पर्यटक शिलांग पीक, लैटलम घाटी, मावजिम्बुम गुफाएँ, हाथी झरने और स्वदेशी संस्कृति संग्रहालय जैसे आकर्षणों को देख सकते हैं।

आकर्षणों के अलावा, आप बस दृश्य उपचार का आनंद ले सकते हैं क्योंकि यह गंतव्य शानदार परिदृश्य समेटे हुए है जिसमें झीलें, पहाड़ियाँ और झरने शामिल हैं।

उदयपुर

उदयपुर को झीलों की भूमि के रूप में जाना जाता है और मानसून के दौरान बारिश झीलों को और भी खूबसूरत बना देती है। राजस्थान का यह खूबसूरत शहर रोमांटिक हो जाता है और बेहतरीन नजारे पेश करता है।

इसके अलावा, मानसून के मौसम में सज्जन गढ़ का नजारा एक महत्वपूर्ण आकर्षण है जिसे जुलाई में उदयपुर आने पर जरूर देखना चाहिए। इसके अलावा, यहाँ घूमने के लिए अन्य आकर्षणों में लेक पैलेस, जग मंदिर, सिटी पैलेस, फतेहसागर झील, पिछोला झील, मानसून पैलेस, कुंभलगढ़ किला, अम्बराई घाट और बंगोर की हवेली आदि शामिल हैं।

तवांग

तवांग अरुणाचल प्रदेश में एक शानदार जगह है और यह दलाई लामा का जन्म स्थान भी है। यह जगह एक धार्मिक स्थल है और सुंदर पहाड़ियों और घाटियों वाला एक खूबसूरत हिल स्टेशन भी है, जहाँ बारिश के मौसम में सबसे बेहतरीन नज़ारे देखने को मिलते हैं। तवांग में कई दिलचस्प जगहें हैं जिनमें बाप टेंग कांग, तवांग मठ और कई अन्य शामिल हैं।

आमतौर पर इस जगह पर बहुत ज़्यादा ठंड होती है और इसलिए गर्म और सुहावने मौसम का आनंद लेने के लिए जुलाई में यहाँ आने की सलाह दी जाती है। जुलाई में घूमने के लिए यह एक और मशहूर जगह है।

21 गुरु पूर्णिमा पर्व 29 जुलाई -2026, मुहूर्त, पूजा विधि, मंत्र और महत्व ...

23 श्री जैकलजी आईमाता नारलाई धाम में तीन दिवसीय गुरु पूर्णिमा महोत्सव का आयोजन, 27 जुलाई से

त्योंहार

गुरु पूर्णिमा पर्व 29 जुलाई -2026, मुहूर्त, पूजा विधि, मंत्र और महत्व

कैसे मनाया जाता है गुरु पूर्णिमा पर्व

गुरु पूर्णिमा पर लोग अपने गुरुओं को उपहार देते हैं और उनका आर्शीवाद लेते हैं। जिन लोगों के गुरु अब इस दुनिया में नहीं रहे वे लोग भी गुरुओं की चरण पादुका का पूजन करते हैं। माना जाता है कि इस दिन गुरुओं का आर्शीवाद लेने से जीवन के सभी कष्ट दूर हो जाते हैं। शास्त्रों में गुरु को परम पूजनीय माना गया है। गुरु पूर्णिमा पर्व गुरुजनों को समर्पित है। शिष्य अपने गुरु देव का पूजन करेंगे। वहीं जिनके गुरु नहीं है वे अपना नया गुरु बनाएंगे। पुराणों में कहा गया है कि गुरु ब्रह्मा के समान है और मनुष्य योनि में किसी एक विशेष व्यक्ति को गुरु बनाना बेहद जरुरी है। क्योंकि गुरु अपने शिष्य का सृजन करते हुए उन्हें सही राह दिखाता है, इसलिए गुरु पूर्णिमा के दिन लोग अपने ब्रह्मलीन गुरु के चरण एवं चरण पादुका की पूजा अर्चना करते हैं।

गुरु का अर्थ

ज्योतिषाचार्य ने बताया कि शास्त्रों में गु का अर्थ बताया गया है- अंधकार और रु का का अर्थ- उसका निरोधक. गुरु को गुरु इसलिए कहा जाता है कि वह अंधकार को हटाकर प्रकाश की ओर ले जाता है. प्राचीन काल में शिष्य जब गुरु के आश्रम में नि:शुल्क शिक्षा ग्रहण करते थे तो इसी दिन पूर्ण श्रद्धा से अपने गुरु की पूजा का आयोजन करते थे।

हिन्दू धर्म में गुरु का स्थान भगवान से भी ऊपर माना गया है. इनकी पूजा का दिन होता है गुरु पूर्णिमा, जो हर साल आषाढ़ मास के शुक्लपक्ष की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। हिंदू मान्यता के अनुसार गुरु पूर्णिमा का पावन पर्व महर्षि वेदव्यास की जयंती के रूप में मनाया जाता है, इसीलिए इसे व्यास पूर्णिमा के नाम से भी जाना जाता है। ज्योतिषाचार्य ने बताया कि इस साल गुरु पूर्णिमा का महापर्व बुधवार 29 जुलाई 2026 को मनाया जाएगा। इस दिन अनेक मठों एवं मंदिरों पर गुरुओं की पूजा-अर्चना की जाती है। मान्यता के अनुसार गुरु पूर्णिमा से ही वर्षा ऋतु का आरंभ होता है और आषाढ़ मास की समाप्ति होती है। गुरु पूर्णिमा पर पवित्र नदी में स्नान, गुरुओं की पूजा और दान का महत्व है।

गुरु पूर्णिमा 2026: तिथि और मुहूर्त

गुरु पूर्णिमा 29 जुलाई 2026, दिन बुधवार और सूर्य के नक्षत्र उत्तराषाढ़ा में मनाया जायेगा, चूंकि चंद्रमा इस दिन मकर राशि में रहेंगे। सूर्य का नक्षत्र होने से गुरु पूर्णिमा का विशेष प्रभाव रहेगा। यह समय रहेगा कि गुरु के कृपा और आशीर्वाद से जीवन में सूर्य की प्रबलता प्राप्त होगी और जीवन तेजोमय रहेगा।,

इसलिए मनाते हैं गुरु पूर्णिमा का पर्व : भारतीय संस्कृति में गुरु देवता को तुल्य माना गया है। गुरु को हमेशा से ही ब्रह्मा, विष्णु और महेश के समान पूज्य माना गया है। वेद, उपनिषद और पुराणों का प्रणयन करने वाले वेद व्यास जी को समस्त मानव जाति का गुरु माना जाता है। महर्षि वेदव्यास का जन्म आषाढ़ पूर्णिमा को लगभग 3000 ई. पूर्व में हुआ था।

उनके सम्मान में ही हर वर्ष आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा मनाया जाता है. कहा जाता है कि इसी दिन व्यास जी ने शिष्यों एवं मुनियों को सर्वप्रथम श्री भागवतपुराण का ज्ञान दिया था। अत: यह शुभ दिन व्यास पूर्णिमा के नाम से जाना जाता है।

गुरु पूर्णिमा की पूजा विधि

- गुरु पूर्णिमा के दिन प्रात:काल स्नान आदि नित्यकर्मों से निवृत होने के बाद शुद्ध वस्त्र धारण करने चाहिए।
- पूजा स्थल को गंगा जल छिड़क कर शुद्ध करने के बाद व्यास जी की प्रतिमा या चित्र स्थापित करें।
- अब व्यास जी के चित्र पर ताजे फूल या माला चढ़ाएं और इसके बाद अपने गुरु के पास जाना चाहिए।
- अपने गुरु को ऊँचे सुसज्जित आसन पर बैठाकर फूलों की माला अर्पित करनी चाहिए।
- अब वस्त्र, फल, फूल व माला अर्पण करने के बाद अपने सामर्थ्य अनुसार दक्षिणा देकर उनका आशीर्वाद लेना चाहिए।

गुरु पूर्णिमा का महत्व

शिष्यों द्वारा आध्यात्मिक गुरुओं और अकादमिक शिक्षकों को नमन और धन्यवाद करने के लिए गुरु पूर्णिमा के पर्व को मनाया जाता है। सभी गुरु अपने शिष्यों की भलाई के लिए अपना पूरा जीवन न्योछावर कर देते है। हमेशा से आध्यात्मिक गुरु संसार में शिष्य और दुखी लोगों की सहायता करते आये हैं और ऐसे ही कई उदाहरण हमारे सामने मौजूद है जब गुरुओं ने अपने ज्ञान से अनेक दुखी लोगों की समस्याओं का निवारण किया है। स्वामी विवेकानंद और गुरु नानक ऐसे ही गुरु थे जिन्होंने हमेशा संसार की भलाई के लिए काम किया हैं। गुरु पूर्णिमा को भारत के अतिरिक्त भूटान और नेपाल आदि देशों में भी मनाया जाता है। हमारे देश की गुरु-शिष्य परंपरा भारत से चलकर दूसरे देशों में गई है। हमेशा से ही आध्यात्मिक गुरु प्रवास पर रहते थे और इसी प्रवास के कारण भारत की ये परम्पराएं दूसरे देशों में भी फैली।

गुरु पूर्णिमा का सांस्कृतिक महत्व

हिंदू, बौद्ध और जैन संस्कृतियों में गुरुओं को एक विशेष स्थान प्राप्त है। इन धर्मों या संस्कृतियों में अनेक शैक्षणिक और आध्यात्मिक गुरु हुए हैं जिन्हें भगवान के तुल्य माना गया है। स्वामी अभेदानंद, आदिशंकराचार्य, चैतन्य महाप्रभु आदि प्रसिद्ध हिन्दू गुरु थे। यह हजारों गुरुओं में से कुछ ऐसे नाम हैं जिन्होंने आध्यात्मिक रूप से जनमानस की सेवा की, इसके विपरीत अकादमिक-आध्यात्मिक गुरु; ज्ञान और विद्या प्रदान करते है। सभी गुरुओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए 'गुरु पूर्णिमा' का त्यौहार मनाया जाता है।

महर्षि वेदव्यास और गुरु पूर्णिमा का संबंध

वैदिक मान्यताओं के अनुसार, ऐसा माना जाता है कि प्राचीन काल में ब्रह्मसूत्र, महाभारत, श्रीमद्भागवत और अट्ठारह पुराण आदि साहित्यों के रचियता महर्षि वेदव्यास का जन्म आषाढ़ पूर्णिमा की तिथि पर हुआ था जो ऋषि पराशर के पुत्र थे।

धार्मिक ग्रंथों के अनुसार, महर्षि वेदव्यास को तीनों कालों के ज्ञाता माना गया है। उन्होंने अपनी दिव्य दृष्टि से यह जान लिया था कि कलियुग में धर्म के प्रति लोगों की रुचि में कमी आएगी। धर्म में रुचि कम होने से मनुष्य का ईश्वर के प्रति विश्वास कम, कर्तव्य से विमुख और अल्पायु हो जाएगा। सम्पूर्ण वेद का अध्ययन करने में असमर्थ होगा, इसलिए महर्षि व्यास ने वेद को चार भागों में बाँट दिया जिससे कि अल्प बुद्धि और अल्प स्मरण शक्ति वाले व्यक्ति भी वेदों का अध्ययन कर सकें।

व्यास जी द्वारा ही ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद की रचना की गई। इस प्रकार वेदों का विभाजन करने के कारण ही उन्हें वेद व्यास के नाम से जाना गया। उन्होंने इन चारों वेदों का ज्ञान अपने प्रिय शिष्यों वैशम्पायन, सुमन्तुमुनि, पैल और जैमिन को दिया।

महर्षि वेदव्यास जी के शिष्यों ने अपनी बुद्धि के अनुसार चारों वेदों को अनेक शाखाओं और उप-शाखाओं में विभाजित कर दिया। महर्षि व्यास ने ही महाभारत की रचना की थी। महर्षि व्यास जी को हमारे आदि-गुरु माना जाता हैं। गुरु पूर्णिमा के प्रसिद्ध त्यौहार को व्यास जयंती के रूप में भी मनाया जाता है। इसलिए इस पर्व को व्यास पूर्णिमा भी कहते हैं और इस दिन हमें अपने गुरुओं को व्यास जी का अंश मानकर उनकी पूजा करनी चाहिए।

श्री जैकलजी आईमाता नारलाई धाम में तीन दिवसीय गुरु पूर्णिमा महोत्सव का आयोजन, 27 जुलाई से

भक्ति, साधना और महाप्रसादी के साथ होगा भव्य आयोजन

नारलाई। श्री जैकलजी आईमाता सेवा समिति के तत्वावधान में नारलाई धाम में गुरु पूर्णिमा महोत्सव का भव्य आयोजन 27 से 29 जुलाई 2026 तक श्रद्धा, भक्ति एवं आध्यात्मिक वातावरण में किया जाएगा। महोत्सव के दौरान सुंदरकांड पाठ, दिव्य देव पहाड़ परिक्रमा, भजन संध्या तथा महाप्रसादी सहित विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम आयोजित होंगे।

आयोजन समिति के अनुसार यह महोत्सव श्री भगाबाबाजी, नारलाई एवं सद्गुरु श्री फूलगिरीजी महाराज, नारलाई के पावन सानिध्य में संपन्न होगा। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में गुरु भक्तों, श्रद्धालुओं एवं सीरवी समाज के लोगों के शामिल होने की संभावना है।

कार्यक्रम की रूपरेखा

27 जुलाई 2026 (सोमवार)

शाम 6:15 बजे - सुंदरकांड का सामूहिक पाठ

28 जुलाई 2026 (मंगलवार)

सुबह 7:15 बजे - दिव्य देव पहाड़ परिक्रमा

रात 8:15 बजे - भव्य भजन संध्या

29 जुलाई 2026 (बुधवार)

सुबह 10:15 बजे से - महाप्रसादी

भजन संध्या में महावीर सांखला एंड पार्टी, नागौर अपनी संगीतमय प्रस्तुतियों से श्रद्धालुओं को भक्तिरस में सराबोर करेगी। वहीं कार्यक्रम का मंच संचालन घीसूलाल जी सीरवी (बिजोवा) करेंगे। आयोजन समिति ने सभी गुरु भक्तों, श्रद्धालुओं एवं क्षेत्रवासियों से अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर गुरु पूर्णिमा महोत्सव को सफल बनाने तथा धर्म लाभ लेने का आग्रह किया है।

खंदरा मठ में गुरु पूर्णिमा महोत्सव 29 जुलाई से, गुरु वंदना, आशीर्वचन और धार्मिक आयोजनों में उमड़ेगा श्रद्धा का सैलाब

परमपूज्य गुरुदेव श्री रामनाथ जी गुरु पीताम्बरनाथजी (पोमजी महाराज) के सान्निध्य में आयोजित होगा भव्य समारोह, क्षेत्रभर के श्रद्धालु होंगे शामिल

खंदरा। भारतीय संस्कृति में गुरु को ब्रह्मा, विष्णु और महेश के समान पूजनीय माना गया है। गुरु पूर्णिमा का पर्व गुरु के प्रति श्रद्धा, समर्पण और कृतज्ञता व्यक्त करने का सबसे महत्वपूर्ण अवसर माना जाता है। इसी पावन अवसर पर परम पूज्य श्री 1008 रामनाथजी महाराज मठ, खंदरा में 29 जुलाई 2026 (बुधवार) को भव्य गुरु पूर्णिमा महोत्सव का आयोजन श्रद्धा एवं भक्ति भाव के साथ किया जाएगा। आयोजन को लेकर मठ परिसर में व्यापक तैयारियाँ पूरी कर ली गई हैं तथा श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह देखने को मिल रहा है।

आयोजन समिति ने बताया कि यह धार्मिक आयोजन परमपूज्य गुरुदेव श्री रामनाथ जी गुरु पीताम्बरनाथजी (पोमजी महाराज) के पावन सान्निध्य में संपन्न होगा। कार्यक्रम के दौरान सुबह से ही गुरु चरण पूजन, गुरु वंदना, आरती एवं मंगलाचरण के साथ धार्मिक अनुष्ठानों का शुभारंभ होगा। इसके बाद श्रद्धालुओं को गुरुदेव के पावन दर्शन एवं आशीर्वचन का लाभ प्राप्त होगा। गुरुदेव अपने आध्यात्मिक संदेशों के माध्यम से धर्म, संस्कार, सेवा, सदाचार और मानव जीवन के मूल्यों पर प्रकाश डालेंगे।

गादिपति श्री श्री 1008 श्री रामनाथ जी महाराज

गुरु पूर्णिमा महोत्सव के अवसर पर मठ परिसर को आकर्षक विद्युत सज्जा, पुष्पों एवं पारंपरिक धार्मिक सजावट से अलंकृत किया जाएगा। आयोजन में आसपास के गांवों सहित दूर-दराज़ क्षेत्रों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु एवं भक्तजनों के पहुंचने की संभावना है। आयोजन समिति द्वारा श्रद्धालुओं के बैठने, पेयजल, प्रसाद वितरण एवं अन्य आवश्यक व्यवस्थाओं की विशेष तैयारियाँ की गई हैं ताकि सभी भक्तगण सुगमता से कार्यक्रम में सहभागिता कर सकें।

आयोजन के दौरान गुरु महिमा का गुणगान, भजन-कीर्तन, सामूहिक प्रार्थना एवं गुरु वंदना के माध्यम से भक्तिमय वातावरण निर्मित होगा। श्रद्धालु अपने गुरुदेव के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए गुरु पूजन करेंगे तथा जीवन में आध्यात्मिक उन्नति, ज्ञान, शांति और समृद्धि की कामना करेंगे।

आयोजन समिति का मानना है कि गुरु पूर्णिमा केवल एक पर्व नहीं, बल्कि गुरु के प्रति सम्मान, विश्वास और भारतीय आध्यात्मिक परंपरा को जीवंत बनाए रखने का महत्वपूर्ण अवसर है।

समस्त भक्तगण एवं ग्रामवासी खंदरा की ओर से सभी श्रद्धालुओं से अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर गुरु पूर्णिमा महोत्सव में भाग लेने तथा गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त करने का आग्रह किया गया है। महाप्रसादी का आयोजन पंकज कुमार सुपुत्र स्व. भंवरलाल जी व्यास दुजाना हाल- वापी के द्वारा किया जाएगा

जब खुला श्री सांवलिया सेठ का खजाना; भर गया भंडार

एक महीने की अवधि में मंदिर को कुल 40 करोड़ 81 लाख 40 हजार 278 रुपए की भारी-भरकम भेंट राशि प्राप्त

चित्तौड़गढ़ जिले के मंडफिया स्थित भगवान श्री साँवलिया सेठ के दरबार में भक्तों की आस्था लगातार नए रिकॉर्ड बना रही है. मंदिर में आने वाले श्रद्धालुओं द्वारा काढ़े गए दान और भेंट की गिनती पूरी होने के बाद जो आंकड़े सामने आए हैं, वे एक बार फिर अटूट श्रद्धा का एक बहुत बड़ा और अद्भुत उदाहरण बनकर उभरे हैं. महज एक महीने की अवधि में मंदिर को कुल 40 करोड़ 81 लाख 40 हजार 278 रुपए की भारी-भरकम भेंट राशि प्राप्त हुई है. इसके साथ ही भक्तों ने बड़ी ही श्रद्धा के साथ भारी मात्रा में सोना और चांदी भी ठाकुर जी के चरणों में अर्पित की है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, साँवलिया सेठ मंदिर के दानपात्र बीते 14 जून को खोले गए थे. इसके बाद लगातार सात चरणों में भंडार से निकले चढ़ावे की गिनती का कार्य किया गया, जो मंगलवार को जाकर पूरी तरह से संपन्न हुआ. मंदिर बोर्ड के अध्यक्ष हजारीदास वैष्णव और अन्य प्रशासनिक अधिकारियों की प्रत्यक्ष मौजूदगी में हुई इस गिनती में दानपात्रों से प्राप्त हुई समस्त नकद राशि का पूरा और पारदर्शी लेखा-जोखा तैयार किया गया है.

दानपात्र और ऑनलाइन माध्यम से बरसा धन

सात अलग-अलग चरणों में हुई भंडार की सघन गिनती से मंदिर प्रशासन को 33 करोड़ 15 लाख 18 हजार 759 रुपए की रिकॉर्ड नकद राशि प्राप्त हुई है. इसके अलावा, देश और विदेश के कोने-कोने में रहने वाले श्रद्धालुओं ने भी भगवान साँवलिया सेठ के प्रति अपनी गहरी डिजिटल आस्था व्यक्त की है. भक्तों ने ऑनलाइन माध्यम, मनी ऑर्डर और मंदिर के आधिकारिक भेंट कक्ष कार्यालय में व्यक्तिगत रूप से पहुंचकर रसीद कटवाकर भेंट राशि जमा कराई. इन सभी बाह्य माध्यमों से मंदिर को कुल 7 करोड़ 66 लाख 21 हजार 519 रुपए का दान प्राप्त हुआ. इस प्रकार, मंदिर के मुख्य दानपात्रों से मिली भारी राशि और कार्यालय के भेंटकक्ष में जमा हुई कुल राशि को मिलाकर साँवलिया सेठ का कुल मासिक चढ़ावा 40 करोड़ 81 लाख 40 हजार 278 रुपए के जादुई आंकड़े तक पहुंच गया. यह विशाल आंकड़ा स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि साँवलिया सेठ के प्रति श्रद्धालुओं का विश्वास समय के साथ और अधिक मजबूत हो रहा है.

खजाने से निकला 110 किलो चांदी और सोना

नकद राशि के इस विशाल भंडार के अलावा, भक्तों ने अपनी मनोकामनाएं पूरी होने पर बहुमूल्य धातुएं भी भगवान को जी भरकर अर्पित की हैं. मंदिर प्रशासन द्वारा जारी आधिकारिक रिपोर्ट के अनुसार, इस बार के भंडार और भेंटकक्ष से कुल 1 किलो 738 ग्राम 800 मिलीग्राम शुद्ध सोना प्राप्त हुआ है. इसके साथ ही भगवान के खजाने में 110 किलो 648 ग्राम चांदी भी भक्तों द्वारा चढ़ाई गई है. इन सभी बहुमूल्य भेंटों को मंदिर के तय नियमानुसार पूरी सुरक्षा के साथ लॉकर में रखा गया है और उनका विस्तृत रिकॉर्ड तैयार किया जा रहा है.

देश का प्रमुख आस्था केंद्र बना मंडफिया

मंदिर प्रशासन का कहना है कि श्री साँवलिया सेठ के दरबार में वर्षभर लाखों की संख्या में श्रद्धालु दर्शन के लिए पहुंचते हैं. विशेष अवसरों, मेलों और त्योहारों पर यहां आने वाले भक्तों की संख्या कई गुना और अधिक बढ़ जाती है. हर महीने लगातार बढ़ रही यह भेंट राशि और श्रद्धालुओं का रेला यह साबित करता है कि साँवलिया सेठ का यह पावन दरबार केवल राजस्थान प्रदेश का ही नहीं, बल्कि संपूर्ण भारत देश के प्रमुख शीर्ष आस्था केंद्रों में अग्रिम पंक्ति में शामिल हो चुका है. भक्तों का यह दृढ़ विश्वास है कि साँवलिया सेठ के दरबार में जो भी सच्चे मन से हाजिरी लगाता है, उसकी हर मनोकामना अवश्य पूरी होती है.

राम मंदिर दान चोरी कैसे हुई, कितने की हुई, किसने की, क्या लिए गए एक्शन?

राम मंदिर दान चोरी की जांच में जुटी एसआईटी की प्रारंभिक रिपोर्ट सार्वजनिक हो गई है, जिसमें चोरी की पुष्टि की गई है। साथ ही 6 आरोपियों का सीधा नाम एसआईटी ने लिया है। रिपोर्ट में बताया गया है कि चढ़ावे की गिनती के दौरान कर्मचारियों ने कई बार नकद छिपाया था। एसआईटी ने सुरक्षा व्यवस्था और विजिलेंस सिस्टम की कमियों का भी जिक्र किया है। एसआईटी की प्रारंभिक जांच रिपोर्ट श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट को सौंप दी गई है।

कोई जेब में, कोई मोजे में छिपा रहा है नोट

ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष गोविंद देव गिरि ने बैठक के बाद संवाददाताओं से कहा कि एसआईटी की प्रारंभिक रिपोर्ट न्यासियों के समक्ष पढ़ी गई, लेकिन उस पर कोई चर्चा या बहस नहीं हुई। उन्होंने यह भी कहा कि एसआईटी की जांच अभी जारी है। प्रारंभिक रिपोर्ट के अनुसार, 27 अप्रैल से पांच जून के बीच के सीसीटीवी फुटेज में कई अवसरों पर कर्मचारियों को गिनती कक्ष के भीतर कथित तौर पर नोटों की गड्डियां और खुली नकदी अपने कपड़ों, जेबों, जूतों तथा अन्य स्थानों पर छिपाते हुए देखा गया। रिपोर्ट में ऐसी लगभग 70 संदिग्ध घटनाओं का उल्लेख किया गया है।

कर्मचारी प्रोटोकॉल फॉलो नहीं करते थे

एसआईटी के अनुसार ये कथित अनियमितताएं अलग-अलग घटनाएं नहीं थीं, बल्कि कई दिनों तक अपनाई गई एक सुनियोजित और बार-बार दोहराई जाने वाली प्रक्रिया प्रतीत होती हैं। जांच दल ने पाया कि गिनती कक्ष में निर्धारित सुरक्षा प्रोटोकॉल का पालन नहीं किया गया। एंट्री और एग्जिट के समय कर्मचारियों की तलाशी नहीं ली जाती थी, उनके निजी सामान पर पर्याप्त नियंत्रण नहीं था। कई दानपात्रों की नकदी एक साथ गिनी जाती थी तथा मूल्यवान चढ़ावे के अभिलेखीकरण और सत्यापन में गंभीर कमियां थीं।

एसआईटी ने इन 6 लोगों का सीधा लिया नाम

रिपोर्ट में अविनाश शुक्ला, अनुकूल मिश्रा, लव कुश मिश्रा, मनीष कुमार यादव, करुणेश पांडेय और राम शंकर मिश्रा का नाम लेते हुए कहा गया है कि प्रथम दृष्टया इनकी संलिप्तता सामने आई है. इन सभी आरोपियों सहित कुल आठ लोगों को पहले ही गिरफ्तार किया जा चुका है. रिपोर्ट के अनुसार, जांच शुरू होने से पहले कुछ कर्मचारियों के पास से लगभग 78.94 लाख रुपये बरामद किए गए थे। रिपोर्ट में चार जून को गिनती कक्ष से लगभग 2.25 लाख रुपये बरामद होने का भी उल्लेख किया गया है।

बैंक में घोषित आय की तुलना में ज्यादा लेनदेन

एसआईटी ने कहा कि संबंधित कर्मचारियों के बैंक खातों की जांच में उनकी घोषित आय की तुलना में अधिक नकद जमा और वित्तीय लेनदेन पाए गए हैं, जिसके मद्देनजर विस्तृत वित्तीय जांच की आवश्यकता है. रिपोर्ट में ट्रस्ट की निगरानी व्यवस्था पर भी सवाल उठाए गए हैं। इसमें कहा गया है कि सुरक्षा व्यवस्था, सीसीटीवी निगरानी, मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) के अनुपालन, कर्मचारियों की तलाशी तथा पर्यवेक्षण में गंभीर कमियों के कारण कथित चोरी और गबन संभव हो पाया।

योगी सरकार ने 25 जून को सौंप दी थी एसआईटी की रिपोर्ट

हालांकि, एसआईटी ने कहा कि सोशल मीडिया पर चांदी की ईंटों और अन्य मूल्यवान चढ़ावे के गायब होने संबंधी आरोपों की प्रारंभिक जांच में पुष्टि नहीं हुई है। इसके बावजूद उसने मूल्यवान चढ़ावे के प्रबंधन, दस्तावेजीकरण और सत्यापन प्रणाली को और मजबूत करने की सिफारिश की है. उत्तर प्रदेश सरकार ने 25 जून को एसआईटी की प्रारंभिक रिपोर्ट की प्रति ट्रस्ट को भेजते हुए उसे जांच के निष्कर्षों से अवगत कराया था। यह रिपोर्ट ट्रस्ट की बैठक के बाद जारी विज्ञप्ति के साथ संलग्न की गई, जिसमें विवाद के बीच ट्रस्ट ने अपने महासचिव चंपत राय और सदस्य अनिल मिश्रा के इस्तीफे स्वीकार कर लिए।

चंपत राय और अनिल मिश्रा का इस्तीफा स्वीकार

राम मंदिर में चढ़ावे के प्रबंधन को लेकर चल रहे विवाद के बीच यह रिपोर्ट सामने आई है। इससे पहले सोमवार को ट्रस्ट ने चंपत राय और अनिल मिश्रा के इस्तीफे स्वीकार करते हुए कृष्ण मोहन को अंतरिम महासचिव नियुक्त किया. कोषाध्यक्ष गोविंद देव गिरि ने कहा कि यह केवल प्रारंभिक रिपोर्ट है और जांच अभी जारी रहेगी। उन्होंने आभूषणों तथा अन्य मूल्यवान चढ़ावे के गायब होने संबंधी आरोपों को निराधार बताया. उन्होंने मीडिया के समक्ष आभूषण और अन्य मूल्यवान चढ़ावे भी प्रदर्शित किए और कहा कि इन्हें ट्रस्ट ने सुरक्षित रखा है।

एसआईटी ने स्पष्ट किया कि उसकी यह रिपोर्ट प्रारंभिक है और विस्तृत जांच के आधार पर आगे की कानूनी कार्रवाई की जाएगी। उत्तर प्रदेश सरकार ने एक जुलाई को एसआईटी के कार्यकाल में 15 दिन का विस्तार किया था।

राम मंदिर चढ़ावा चोरी एसआईटी रिपोर्ट

45 दिन के CCTV फुटेज में 70 बार चोरी, अंतिम रिपोर्ट बाकी

राम जन्मभूमि मंदिर के चढ़ावा चोरी मामले में गठित विशेष जांच दल (SIT) की प्रारंभिक रिपोर्ट सामने आ गई है। रिपोर्ट में कई गंभीर खामियों और लापरवाहियों का खुलासा हुआ है। जांच में बताया गया है कि चढ़ावे की गिनती (गणना) की प्रक्रिया पर निगरानी के लिए बनाए गए नियमों को ट्रस्ट के पदाधिकारियों ने कमजोर किया। इसी का फायदा उठाकर आरोपियों ने मंदिर के चढ़ावे में चोरी की। हालांकि रिपोर्ट में श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय और कोषाध्यक्ष गोपाल राय का कोई जिक्र नहीं किया गया है। इसे लेकर सवाल उठ रहे हैं। हालांकि अंतिम रिपोर्ट अभी आनी बाकी है।

ये खामियां बनी चोरी का कारण

- गणना कक्ष में प्रवेश के नियमों का पालन नहीं हुआ।
- कर्मचारियों की तलाशी नहीं ली गई.
- निर्धारित वेशभूषा (ड्रेस कोड) लागू नहीं की गई.
- निजी सामान पर नियंत्रण नहीं रखा गया.
- दान पेटियों की अलग-अलग गणना और रिकॉर्डिंग ठीक से नहीं हुई. प्रभावी निगरानी नहीं की गई।
- ट्रस्ट और बैंक के प्रतिनिधि मौजूद होने के बावजूद सुरक्षा व्यवस्था लागू नहीं कराई गई।
- CCTV कैमरे लगे थे, लेकिन उनकी लाइव निगरानी नहीं की गई। यदि फुटेज पर नजर रखी जाती तो चोरी रोकी जा सकती थी

6 फरवरी 2025 को बने सख्त नियमों को किया गया कमजोर

SIT रिपोर्ट के अनुसार 6 फरवरी 2025 को चढ़ावे की गणना प्रक्रिया को सुरक्षित बनाने के लिए स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर बनाई गई थी। इसमें तय किया गया था कि गणना कक्ष में कौन जाएगा, कर्मचारियों की एंट्री कैसे होगी, वे किस तरह की वेशभूषा (ड्रेस) पहनेंगे और गिनती शुरू होने से पहले तथा खत्म होने के बाद उनकी तलाशी भी ली जाएगी, लेकिन बाद में इन नियमों को कमजोर कर दिया गया। रिपोर्ट में है कि यह जांच का विषय है कि किन परिस्थितियों व कारणों में सुरक्षा नियमों में बदलाव किया गया। इन्हीं कमजोरियों का फायदा उठाकर आरोपी चढ़ावे की रकम चोरी करने में सफल हुए।

अनिल मिश्रा की निगरानी में लापरवाही : एसआईटी रिपोर्ट में ट्रस्ट के सदस्य अनिल मिश्रा की भूमिका पर भी सवाल उठाए गए हैं। SIT के मुताबिक 20 सितंबर 2024 को उन्हें दान और चढ़ावा प्रबंधन की जिम्मेदारी दी गई थी। उनकी जिम्मेदारी थी कि गणना प्रक्रिया की प्रभावी निगरानी करें, लेकिन ऐसा नहीं हुआ. रिपोर्ट में उन्हें निगरानी में लापरवाही का दोषी माना गया है।

टिन्नू यादव की साजिश सामने आई : SIT रिपोर्ट के अनुसार राम शंकर यादव उर्फ टिन्नू यादव चोरी का मुख्य आरोपी है। वह मंदिर परिसर में रखी विभिन्न दान पेटियों (खुंडियों) की चाबियां ट्रस्ट प्रतिनिधि के रूप में अपने पास ही रखता था। हालांकि इसके लिए उसे कोई औपचारिक अधिकार ट्रस्ट की ओर से नहीं दिए गए थे। SIT रिपोर्ट के अनुसार टिन्नू यादव ने अपने भतीजे मनीष यादव को ट्रस्ट में नौकरी दिलाई और उसकी ड्यूटी चढ़ावे की गणना में लगवाई थी। इसके बाद दोनों ने मिलकर चढ़ावे की रकम की चोरी की।

गणना प्रभारी पर भी कार्रवाई

रिपोर्ट में गणना प्रभारी सुभाष श्रीवास्तव की जिम्मेदारी भी तय की गई है। जांच में कहा गया है कि उनकी मौजूदगी में ही चढ़ावे की रकम चोरी हुई। इसलिए उनके खिलाफ भी मुकदमा दर्ज किया गया है।

45 दिन की CCTV फुटेज में 70 बार चोरी

SIT रिपोर्ट के अनुसार CCTV फुटेज केवल 27 अप्रैल 2026 से अगले 45 दिनों तक की थी। इसी फुटेज में आरोपी करीब 70 बार नोटों की गड्डियां चोरी करते हुए देखे गए. रिपोर्ट में बताया गया है कि इससे पहले के फुटेज उपलब्ध नहीं हैं। इसलिए यह पता नहीं चल सका कि चोरी कब से चल रही थी और कुल कितनी रकम का गबन हुआ। इसी कारण वास्तविक चोरी की रकम का आकलन भी नहीं हो सकता।

CCTV सिर्फ 45 दिन सुरक्षित रखना बड़ी चूक

SIT ने यह भी कहा कि मंदिर जैसी संवेदनशील जगह पर केवल 45 दिन की CCTV फुटेज सुरक्षित रखना उचित नहीं था। पहले ही 180 दिन तक फुटेज सुरक्षित रखने का सुझाव दिया गया था, लेकिन उसका पालन नहीं किया गया। इससे पुराने रिकॉर्ड उपलब्ध नहीं हो सके और जांच प्रभावित हुई।

बैंक की भूमिका पर सवाल

रिपोर्ट में बैंक की जिम्मेदारी भी तय की गई है। कहा गया है कि गणनाकर्मियों को निर्धारित वेशभूषा उपलब्ध नहीं कराई गई। बैंक के प्रतिनिधि गणना के दौरान मौजूद रहते थे, लेकिन उन्होंने भी नियमों का पालन सुनिश्चित नहीं कराया। इसके अलावा अधिकारियों का नियमित रोटेशन भी नहीं किया गया।

बहरहाल SIT ने साफ किया है कि यह प्रारंभिक जांच रिपोर्ट है। अंतिम रिपोर्ट में प्रशासनिक जवाबदेही, संस्थागत खामियों, पर्यवेक्षण की विफलताओं और सुधारात्मक सुझावों पर विस्तार से जानकारी दी जाएगी। इसलिए मामले में आगे और भी बड़े खुलासे होने की संभावना है। रिपोर्ट में कहा गया है कि चोरी इसलिए संभव हुई, क्योंकि सुरक्षा से जुड़े कई नियमों का पालन ही नहीं किया गया।

रामचरित मानस, काकभुशुंडि... राम मंदिर ट्रस्ट ने दिखाया वो चढ़ावा जिनकी चोरी का हुआ दावा

अयोध्या के श्रीराम मंदिर में चढ़ावे और दान की गई कीमती वस्तुओं के गायब होने के आरोपों के बीच ट्रस्ट की अहम बैठक संपन्न हो गई। यह बैठक करीब तीन घंटे तक चली। खास बात यह रही कि पहली बार ट्रस्ट की बैठक राम मंदिर परिसर में आयोजित की गई। बैठक के बाद ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष स्वामी गोविंद देव गिरी महाराज ने इस पूरे विवाद पर अपना पक्ष रखा। उन्होंने कहा कि दान में मिली सभी वस्तुएं पूरी तरह सुरक्षित हैं और किसी भी सामान के गायब होने की बात सही नहीं है. प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान ट्रस्ट ने उन सभी वस्तुओं को सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित किया, जिनके चोरी होने या गायब होने के आरोप लगाए जा रहे थे. सोने की रामचरितमानस, भगवान राम के चरण चिन्ह, हार और काकभुशुंडि को कॉन्फ्रेंस में रखा गया। दरअसल, पूर्व IAS अधिकारी एस. लक्ष्मीनारायणन ने सार्वजनिक रूप से आरोप लगाया था कि उनके परिवार ने अप्रैल 2024 में श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट को सोने की परत चढ़ी 'रामचरितमानस' की एक प्रति दान की थी, जिसकी कीमत करीब 5 करोड़ रुपए है। उनका दावा था कि यह रामचरितमानस कुछ समय तक श्रद्धालुओं के दर्शन के लिए प्रदर्शित की गई थी।

हालांकि, बाद में उसे वहां से हटा दिया गया और उसके बारे में कोई स्पष्ट जानकारी नहीं दी गई। पूर्व नौकरशाह का यह भी कहना था कि उन्होंने इस संबंध में कई बार मंदिर प्रशासन और महामंत्री चंपत राय से जानकारी मांगी, लेकिन उन्हें संतोषजनक जवाब नहीं मिला। इन आरोपों पर गोविंद देव गिरी ने कहा कि दान की गई सभी वस्तुएं ट्रस्ट की निगरानी में सुरक्षित हैं।

स्वामी गोविंद देव गिरी ने कहा कि किसी भी दान की गई वस्तु के चोरी होने या गायब होने का दावा तथ्यात्मक नहीं है। ट्रस्ट ने यह भी जानकारी दी कि पूरे मामले को लेकर एक समिति का गठन किया गया है। यह समिति संबंधित तथ्यों की समीक्षा करेगी और आगे की प्रशासनिक प्रक्रिया पर अपनी रिपोर्ट देगी। ट्रस्ट की अगली बैठक 22 जुलाई को बुलाई गई है।

उस समय तक स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम की विस्तृत और अंतिम रिपोर्ट भी ट्रस्ट के सामने आ जाएगी। रिपोर्ट मिलने के बाद आगे की कार्रवाई पर फैसला लिया जाएगा। उन्होंने बताया कि 22 जुलाई की बैठक में प्रशासनिक अधिकारियों की नियुक्ति पर भी चर्चा होगी। इसके साथ ही कुछ नए पदाधिकारियों और कुछ नए न्यासियों की नियुक्ति का निर्णय भी लिया जाएगा.

उस समय तक स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम की विस्तृत और अंतिम रिपोर्ट भी ट्रस्ट के सामने आ जाएगी। रिपोर्ट मिलने के बाद आगे की कार्रवाई पर फैसला लिया जाएगा। उन्होंने बताया कि 22 जुलाई की बैठक में प्रशासनिक अधिकारियों की नियुक्ति पर भी चर्चा होगी. इसके साथ ही कुछ नए पदाधिकारियों और कुछ नए न्यासियों की नियुक्ति का निर्णय भी लिया जाएगा।

इसके साथ ही श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट ने महामंत्री चंपत राय और अनिल मिश्रा का इस्तीफा स्वीकार कर लिया। कृष्ण मोहन को अंतरिम महामंत्री न्यूक्त किया गया है। इस बैठक में ट्रस्ट के चेयरमैन नृत्य गोपाल दास समेत नौ में से सात परमानेंट मेंबर मौजूद थे। इसमें चंपत राय और अनिल मिश्रा को शामिल नहीं किया गया। बैठक शाम करीब 6.30 बजे खत्म हुई।

इस मामले में एसआईटी की प्रारंभिक जांच रिपोर्ट भी सामने आई है। श्रद्धालुओं द्वारा अर्पित बहुमूल्य वस्तुओं के गायब होने की जांच की गई है. रिपोर्ट के मुताबिक, इंडियन बुलियन एंड ज्वैलर्स एसोसिएशन के उत्तर भारत के प्रमुख अनुराग रस्तोगी द्वारा वर्ष 2020 में अर्पित करीब 38 किलो चांदी और सर्राफा एसोसिएशन द्वारा 22.576 किलोग्राम चांदी की ईंट ट्रस्ट के रिकॉर्ड में दर्ज मिली।

जांच में पाया गया कि इन सभी वस्तुओं को बाद में गलाकर बैंक लॉकर में सुरक्षित रखने के लिए सिक्योरिटी प्रिंटिंग एंड मिन्टिंग कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया को भेजा गया था और उनका पूरा रिकॉर्ड उपलब्ध है.= रिपोर्ट में विश्व सिंधी सेवा समाज के अध्यक्ष राजू मंडवानी के उस दावे की भी जांच की गई, जिसमें उन्होंने 2021 में 25-25 किलो की आठ चांदी की ईंटें, यानी कुल 200 किलो चांदी, ट्रस्ट को भेंट करने और उसकी रसीद नहीं मिलने की बात कही थी. एसआईटी को ट्रस्ट द्वारा उपलब्ध कराई गई सूची में इन चांदी की ईंटों का पूरा विवरण मिला. जांच में पुष्टि हुई कि ये ईंटें ट्रस्ट की अभिरक्षा में थीं।

इसे बाद में नियमानुसार गलाने के लिए भेजी गई थीं। मुंबई के कारोबारी अनिल विश्वकर्मा द्वारा भेंट किए गए चांदी के हार और चांदी की चरण पादुकाओं को लेकर भी जांच की गई. ट्रस्ट पदाधिकारियों ने बताया कि ये दोनों वस्तुएं सुरक्षित अभिरक्षा में हैं और एसआईटी ने भी इसका सत्यापन किया। रिपोर्ट में कहा गया है कि सोशल मीडिया पर चल रहे इन तीनों मामलों में ट्रस्ट पर लगाए गए आरोपों की पुष्टि नहीं हुई।

स्वामी विवेकानंद की शिक्षाएँ : बदलते समय में अमर जीवन-दर्शन

'राष्ट्र का भविष्य उसकी युवा शक्ति के चरित्र में बसता है।' यह विचार केवल एक आदर्श वाक्य नहीं, बल्कि स्वामी विवेकानंद के संपूर्ण जीवन-दर्शन का सार है। समय बदलता है, परिस्थितियाँ बदलती हैं, सभ्यताएँ नई करवट लेती हैं, विज्ञान नई ऊँचाइयाँ छूता है; किंतु कुछ विचार ऐसे होते हैं जो काल की सीमाओं से परे जाकर मानवता के स्थायी पथप्रदर्शक बन जाते हैं। स्वामी विवेकानंद की शिक्षाएँ इसी श्रेणी में आती हैं। वे किसी एक युग, धर्म या देश के संत नहीं थे; वे मानव चेतना के ऐसे जागरण-पुरुष थे जिनकी वाणी आज भी उतनी ही जीवंत है, जितनी डेढ़ सौ वर्ष पूर्व थी।

सत्य भूषण शर्मा,
उदयपुर [राजस्थान]

आज का मनुष्य अभूतपूर्व तकनीकी प्रगति के बीच खड़ा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल क्रांति और वैश्विक संपर्क ने जीवन को सुविधाजनक बनाया है, परंतु मनुष्य का अंतर्मन पहले से अधिक अकेला, अस्थिर और बेचैन दिखाई देता है। ज्ञान का विस्फोट हुआ है, परंतु विवेक का क्षरण भी उतनी ही तेजी से हुआ है। सूचनाओं की बाढ़ है, लेकिन जीवन का उद्देश्य धुंधला पड़ता जा रहा है। ऐसे संक्रमणकाल में स्वामी विवेकानंद की वाणी मानो समय के पार से पुकारती है— 'मनुष्य, अपनी शक्ति को पहचानो; तुम्हारे भीतर अनंत संभावनाएँ हैं।'

विवेकानंद का सबसे बड़ा संदेश था—आत्मविश्वास। उनका मानना था कि जो स्वयं पर विश्वास नहीं करता, वह किसी भी महान उपलब्धि का अधिकारी नहीं बन सकता। आज का युवा प्रतिस्पर्धा, असफलता के भय, मानसिक तनाव और सामाजिक तुलना के दबाव से जूझ रहा है। सोशल मीडिया ने उपलब्धियों की चमक तो बढ़ाई है, किंतु आत्मस्वीकृति की रोशनी को कहीं धुंधला भी किया है। ऐसे समय में विवेकानंद का संदेश युवाओं के भीतर छिपी ऊर्जा को जागृत करता है कि सफलता बाहर नहीं, भीतर के विश्वास से जन्म लेती है।

उन्होंने शिक्षा को केवल जानकारी अर्जित करने की प्रक्रिया नहीं माना। उनके अनुसार शिक्षा वह है, जो मनुष्य के भीतर निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करे। आज जब शिक्षा का उद्देश्य अनेक बार केवल अंक, डिग्री और रोजगार तक सीमित होकर रह जाता है, तब विवेकानंद का शिक्षा-दर्शन हमें स्मरण कराता है कि चरित्र, संवेदनशीलता, नैतिकता और विवेक के बिना ज्ञान अधूरा है। एक शिक्षित मस्तिष्क यदि मानवीय मूल्यों से रिक्त हो जाए, तो वह समाज के लिए वरदान नहीं, चुनौती भी बन सकता है।

स्वामी विवेकानंद ने राष्ट्रभक्ति को संकीर्ण राष्ट्रवाद नहीं, बल्कि जनसेवा, आत्मगौरव और सामाजिक उत्तरदायित्व का नाम दिया। उनके लिए भारत केवल भूभाग नहीं, बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक चेतना था। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे राष्ट्र निर्माण को अपना जीवन-धर्म बनाएँ। आज जब भारत विश्व मंच पर नई पहचान बना रहा है, तब आवश्यकता केवल आर्थिक प्रगति की नहीं, बल्कि ऐसे नागरिकों की है जिनके भीतर ईमानदारी, अनुशासन, कर्तव्यनिष्ठा और सेवा-भाव समान रूप से विद्यमान हों।

उनका मानवतावाद आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। धर्म, जाति, भाषा और विचारधारा के नाम पर बढ़ती कटुता के बीच विवेकानंद का यह संदेश कि प्रत्येक मनुष्य में ईश्वर का अंश विद्यमान है, समाज को नई दिशा देता है। उन्होंने किसी धर्म की श्रेष्ठता सिद्ध करने का प्रयास नहीं किया, बल्कि सभी मार्गों में निहित सत्य का सम्मान करना सिखाया। विश्व धर्म सम्मेलन में उनका उद्बोधन केवल भारत की विजय नहीं था; वह मानवता की साझा चेतना का उद्घोष था। विवेकानंद का जीवन यह भी सिखाता है कि आध्यात्मिकता संसार से पलायन नहीं, बल्कि समाज के बीच रहकर उसके दु:ख-दर्द को अपना मानने का नाम है। उन्होंने भूखे व्यक्ति के लिए रोटी को ही पहला धर्म बताया। आज जब विकास के बावजूद आर्थिक असमानता और सामाजिक विषमता बनी हुई है, तब उनका सेवा-दर्शन हमें बताता है कि सच्चा धर्म मंदिरों की घंटियों से अधिक पीड़ित मानव की सहायता में प्रकट होता है।

यदि हम आधुनिक जीवन की सबसे बड़ी चुनौती खोजें, तो वह है—मूल्यों का संकट। सुविधा बढ़ी है, किंतु संतोष घटा है; साधन बढ़े हैं, पर साधना कम हुई है; संपर्क बढ़े हैं, लेकिन संबंध कमजोर हुए हैं। इस विडंबना का समाधान विवेकानंद के संतुलित जीवन-दर्शन में मिलता है। वे विज्ञान का विरोध नहीं करते थे, बल्कि चाहते थे कि विज्ञान के साथ विवेक, शक्ति के साथ संवेदना और प्रगति के साथ नैतिकता भी चले। यही संतुलन किसी भी सभ्यता को दीर्घकाल तक टिकाऊ बनाता है। महिला सशक्तीकरण पर उनके विचार आज भी उतने ही क्रांतिकारी प्रतीत होते हैं। वे मानते थे कि जिस समाज में नारी सम्मानित और शिक्षित नहीं होगी, वह समाज कभी पूर्ण विकास नहीं कर सकता। आज जब महिलाओं की भूमिका प्रत्येक क्षेत्र में निरंतर बढ़ रही है, तब विवेकानंद का दृष्टिकोण सामाजिक समानता की मजबूत आधारशिला सिद्ध होता है।

पर्यावरण संकट, उपभोक्तावाद और असीमित भौतिक इच्छाओं से जूझती दुनिया में उनका संयमपूर्ण जीवन-दर्शन भी अत्यंत प्रासंगिक है। उन्होंने सादगी को कमजोरी नहीं, बल्कि आत्मबल का प्रतीक माना। प्रकृति के साथ संतुलित संबंध और आवश्यकताओं को सीमित रखने की भावना आज सतत विकास की वैश्विक अवधारणा से पूर्णत: मेल खाती है।

वास्तव में, स्वामी विवेकानंद की शिक्षाओं की प्रासंगिकता इसलिए बनी हुई है क्योंकि उन्होंने समस्याओं का नहीं, मनुष्य का समाधान प्रस्तुत किया। उनका विश्वास था कि यदि मनुष्य का चरित्र सुदृढ़ हो जाए, तो समाज, राष्ट्र और विश्व स्वत: सुदृढ़ हो जाएगा। इसलिए उन्होंने बाहरी परिवर्तन से पहले भीतरी जागरण का आह्वान किया।

आज आवश्यकता केवल विवेकानंद को स्मरण करने की नहीं, बल्कि उन्हें जीने की है। उनके विचार यदि विद्यालयों की पुस्तकों से निकलकर परिवारों की संस्कृति, युवाओं के संकल्प, राजनीति की नैतिकता, शिक्षा की आत्मा और समाज की संवेदना बन जाएँ, तो भारत ही नहीं, संपूर्ण विश्व अधिक मानवीय, शांतिपूर्ण और समृद्ध बन सकता है।

अंतत: कहा जा सकता है कि स्वामी विवेकानंद का जीवन एक दीपस्तंभ है, जो हर युग के अंधकार में नई दिशा दिखाता है। बदलते समय में साधन बदल सकते हैं, चुनौतियाँ बदल सकती हैं, किंतु सत्य, चरित्र, आत्मविश्वास, सेवा और मानवता जैसे मूल्य कभी अप्रासंगिक नहीं होते। इसलिए स्वामी विवेकानंद की शिक्षाएँ केवल इतिहास की धरोहर नहीं, वर्तमान की आवश्यकता और भविष्य की अनिवार्यता हैं। जब तक मानव अपने भीतर छिपी दिव्यता की खोज करता रहेगा, तब तक विवेकानंद का संदेश उसकी राह को आलोकित करता रहेगा।

--स्व-घोषणा: मैं घोषित करता हूँ कि सादर प्रकाशनार्थ प्रस्तुत आलेख स्वामी विवेकानंद की शिक्षाएँ : बदलते समय में अमर जीवन-दर्शन मौलिक ,अप्रकाशित एवं अप्रसारित है।

गर्म होती पृथ्वी, ठंडी पड़ती समझः भारत का जलवायु सच

[बदलता मौसम, बदलता भारतः क्या हम सही दिशा में हैं?]
[धरती की चीख - क्या भारत जलवायु आपातकाल की दहलीज़ पर है?]

भारतीय सभ्यता सदियों तक ऋतुओं पर उतना ही भरोसा करती रही, जितना सूर्योदय पर। खेती, नदियाँ, पर्व-त्योहार और जीवन मौसम की नियमित लय पर आधारित थे। किंतु अब प्रकृति चेतावनी दे रही है। अप्रैल-मई 2026 में कई शहरों का तापमान 46-48एष्ट तक पहुँचा, हीट-स्ट्रोक से जानें गईं और बिजली की मांग लगभग 270 गीगावाट तक पहुँची। जुलाई के आरंभ में मुंबई, पालघर और ठाणे में 200-300 मिमी तथा कुछ स्थानों पर 600-800 मिमी से अधिक वर्षा ने जनजीवन और ढांचे को ठप कर दिया। हिमालय में भूस्खलन, मैदानी क्षेत्रों में बाढ़, तटीय इलाकों में चक्रवात और सूखा बताते हैं कि जलवायु परिवर्तन अब भविष्य नहीं, वर्तमान है। विश्व मौसम संगठन (डब्ल्यूएमओ), अंतरसरकारी जलवायु परिवर्तन पैनल (आईपीसीसी) और भारतीय मौसम विभाग (आईएमडी) की नवीनतम रिपोर्टें भी इसी निष्कर्ष की पुष्टि करती हैं।

प्रो. आरके जैन
'अरिजीत'
शिक्षाविद् बड़वानी (मप्र)
ईमेल: rtirkjain@gmail.com

भारत की भौगोलिक विविधता उसकी सबसे बड़ी शक्ति भी है और सबसे बड़ी संवेदनशीलता भी। उत्तर में हिमालय, दक्षिण में हिंद महासागर, विस्तृत तटीय क्षेत्र, विशाल मैदान और शुष्क भूभाग के कारण मौसम का मामूली असंतुलन भी करोड़ों लोगों को प्रभावित करता है। वर्ष 2026 में प्री-मानसून हीटवेव ने दिन-रात दोनों की गर्मी के रिकॉर्ड तोड़े, जबकि असमान मानसून ने कहीं सूखा तो कहीं बाढ़ ला दी। वैज्ञानिक इसे चरम मौसमी घटनाओं (एक्सट्रीम वेदर इवेंट्स) की बढ़ती आवृत्ति मानते हैं। कंक्रीट का अनियंत्रित विस्तार, नदी तटों पर अतिक्रमण, आर्द्रभूमियों का विनाश और अवैज्ञानिक शहरी नियोजन ने प्राकृतिक आपदाओं को मानवीय त्रासदी बना दिया है। आज अधिकांश आपदाएं प्रकृति से अधिक हमारी विकास नीतियों का परिणाम हैं। भारतीय मौसम विभाग (आईएमडी) के अनुसार हीटवेव की अवधि और तीव्रता बढ़ रही है, जिससे पारिस्थितिक संतुलन डगमगाने लगा है।

जलवायु असंतुलन का सबसे गहरा प्रभाव कृषि पर पड़ रहा है, क्योंकि भारत की बड़ी आबादी आज भी मानसून पर निर्भर है। अनिश्चित वर्षा, बढ़ता तापमान, घटती मिट्टी की नमी और प्राकृतिक आपदाएं पारंपरिक खेती को कमजोर कर रही हैं। वर्ष 2015-2021 के बीच अतिवृष्टि से 33.9 मिलियन हेक्टेयर और सूखे से लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर फसल प्रभावित हुई। वर्ष 2026 में एल-नीनो और मानसून की देरी ने खरीफ उत्पादन की चिंता बढ़ा दी। फसल चक्र बिगड़ रहे हैं, पारंपरिक बीज कम प्रभावी हो रहे हैं और सिंचाई लागत बढ़ रही है। इसका असर किसानों की आय से आगे बढ़कर खाद्य सुरक्षा, ग्रामीण रोजगार और अर्थव्यवस्था पर पड़ रहा है। यदि यह स्थिति बनी रही, तो कृषि संकट आर्थिक ही नहीं, सामाजिक अस्थिरता का कारण बनेगा। इसलिए जलवायु परिवर्तन को केवल पर्यावरणीय मुद्दा मानना उसकी गंभीरता को कम करके आंकना होगा। जलवायु परिवर्तन का गंभीर प्रभाव स्वास्थ्य पर भी पड़ रहा है। तीव्र गर्मी हीट-स्ट्रोक, डिहाइड्रेशन और हृदय रोग बढ़ा रही है, जबकि बाढ़ के बाद मलेरिया, डेंगू और जलजनित बीमारियां फैल रही हैं। बढ़ता तापमान और वायु प्रदूषण श्वसन रोगों को और गंभीर बना रहे हैं। बच्चे, बुजुर्ग, निर्माण श्रमिक, खेतिहर मजदूर और खुले में काम करने वाले लोग सबसे अधिक जोखिम में हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) चेतावनी दे चुका है कि आने वाले दशकों में जलवायु परिवर्तन सार्वजनिक स्वास्थ्य की सबसे बड़ी चुनौतियों में होगा। वर्ष 2026 की भीषण गर्मी में बिजली की रिकॉर्ड मांग और बिजली संकट ने इस चुनौती को और गहरा किया।

भारत जैसे देश में यह केवल स्वास्थ्य नहीं, बल्कि मानवीय गरिमा का भी प्रश्न है। आर्थिक दृष्टि से भी जलवायु परिवर्तन विकास की गति पर सीधा प्रहार कर रहा है। बाढ़, सूखा, चक्रवात और भूस्खलन हर वर्ष अरबों रुपये की सार्वजनिक-निजी संपत्ति नष्ट कर रहे हैं। सड़कें, पुल, रेलमार्ग, बिजली व्यवस्था और औद्योगिक आपूर्ति श्रृंखलाएं बार-बार बाधित हो रही हैं। राहत और पुनर्वास पर सरकारी व्यय बढ़ रहा है, जबकि उत्पादन और श्रम क्षमता घट रही है। विश्व बैंक और आईएमएफ भी इसे केवल पर्यावरणीय नहीं, बल्कि आर्थिक स्थिरता के लिए गंभीर खतरा मानते हैं। 2021 में हीट-स्ट्रेस से लगभग 159 अरब डॉलर की आर्थिक क्षति का अनुमान था, जबकि 2024-26 के अनुमानों में यह लगभग 194 अरब डॉलर तक पहुँच चुका है। घटती उत्पादकता, श्रम घंटों की हानि और बढ़ते बीमा दावे बताते हैं कि यदि जलवायु संकट पर समय रहते नियंत्रण नहीं पाया गया, तो विकास की पारंपरिक अवधारणा भी बदलनी पड़ेगी।

इन चुनौतियों के बीच यह भी सच है कि भारत ने भविष्य की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम उठाए हैं। वर्ष 2070 तक नेट-जीरो उत्सर्जन का लक्ष्य, सौर और पवन ऊर्जा का विस्तार, हरित हाइड्रोजन मिशन, इलेक्ट्रिक वाहन नीति, जैव ईंधन को बढ़ावा और वृक्षारोपण अभियान इसी प्रतिबद्धता के प्रमाण हैं। अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) में भारत की नेतृत्वकारी भूमिका और आपदा पूर्व चेतावनी प्रणालियों का सुदृढ़ीकरण भी उल्लेखनीय है। फिर भी विशेषज्ञ मानते हैं कि केवल सरकारी योजनाएं पर्याप्त नहीं होंगी। वैज्ञानिक शहरी नियोजन, प्रभावी जल निकासी, जल और वन संरक्षण, आर्द्रभूमियों की सुरक्षा तथा स्थानीय स्तर पर जलवायु-अनुकूल विकास मॉडल को राष्ट्रीय प्राथमिकता बनाना ही इस संकट का स्थायी समाधान है।

असल प्रश्न यह नहीं है कि भारत जलवायु आपातकाल घोषित करेगा या नहीं, बल्कि यह है कि क्या हम प्रकृति की लगातार चेतावनियों को समय रहते समझ पाएंगे। विकास और पर्यावरण को विरोधी मानने की सोच अब स्वयं विकास के लिए बाधा बन चुकी है। यदि नीति-निर्माण वैज्ञानिक शोध, विश्वसनीय आंकड़ों और स्थानीय अनुभव पर आधारित हो, तो यही संकट नवाचार और सतत विकास का अवसर बन सकता है। अन्यथा चरम मौसम की घटनाएं हर वर्ष नई सुर्खियां बनेंगी और उनके पीछे छिपा आर्थिक, सामाजिक और मानवीय संकट स्थायी होता जाएगा। बदलते मौसम का सच स्पष्ट है—जलवायु परिवर्तन पर निर्णायक, वैज्ञानिक और सामूहिक कार्रवाई अब केवल पर्यावरण की नहीं, बल्कि भारत के सुरक्षित और सतत भविष्य की अनिवार्य शर्त है।

भारतीय संस्कृति व दर्शन की लोक शिक्षिका- तीजन बाई

भारतीय समाज की लोक संस्कृति सदैव से जीवंत और प्राणवान है। लोकगायन की परंपरा में हमारी अनेक कथाएँ और लोकोपदेश छिपे हुए हैं। ये प्रथा गाँव-गाँव तक सहज सरल नदी की तरह प्रवाहित होती आई है। इसी परंपरा की महान कलाकार तीजन बाई का नाम सदैव स्मरण किया जाएगा। अब वे अपने लौकिक काया से परे हो, हम सब से सदा के लिए विदा हो गईं, किंतु उनकी यश: काया और उनका लोकगायन अमर रहेगा और यह याद दिलाता रहेगा कि कृष्ण कथा की रोमांचकारी व भावपूर्ण प्रस्तुति भारतीय जीवन के हर स्तर पर समाई हुई है। महाभारत कथा के पंडवानी शैली गायन को विश्व प्रसिद्ध पहचान दिलाने वाली पद्म विभूषण डॉ. तीजन बाई का निधन लोक कला जगत के लिए एक अपूरणीय क्षति है। 70 वर्षीय तीजन बाई ने अपने जीवन का हर पल पंडवानी कला को समर्पित किया और अपनी अद्भुत गायन शैली, दमदार मंच प्रस्तुति तथा महाभारत की कथाओं को जीवंत रूप में प्रस्तुत कर देश-दुनिया में करोड़ों लोगों का दिल जीता।

तीजन बाई का इस शैली और प्रस्तुति के पीछे उनके संघर्ष की कहानी को भी भुलाया नहीं जा सकता। परंपराओं से यह गायन महिलाओं के लिए मान्य नहीं था, ना ही मंच पर प्रस्तुति देने की अनुमति थी लेकिन अपने नाना के जुझारु गायन और प्रस्तुतिकरण पर रीझती इस बालिका ने कहीं बहुत गहरे अपने भीतर कृष्ण को बसा लिया और उन पर मुग्ध हुईं। महाभारत की संपूर्ण कथा के केन्द्र कृष्ण थे और उनकी गीता- शिक्षा में समाया जीवन दर्शन एक ओर जहाँ जीवन को नैराश्य से मुक्ति देता है, वहीं दूसरी ओर सत्मार्ग पर चलने की प्रेरणा भी। तीजन बाई को स्त्रियों की कला अभिव्यक्ति का साहस कृष्ण का दर्शन से ही प्राप्त हुआ। जिसके लिए वो सदैव कटिबद्ध और संबद्ध रहीं।

हाथ में तानपूरा, कभी गदा लिए, कभी धनुष बाण, छत्तीसगढ़ी शैली की साड़ी और आभूषण का पहने, केश- विन्यास में रंग-बिरंगे क्लिपों को सजाए, पान का बीड़ा खाए जब तीजन बाई मंच पर चढ़ती तो लगता कला की देवी विराजमान हो गई है। निर्भीक गायन, हाव-भाव, अभिनय, भाव- भंगिमा , जोश के साथ संचालन करके मंच के अन्य वाद्य व दुहराने वाले गायकों को उल्लास से जोशीला बनाने वाली तीजन बाई को केवल एक गायिका कहना बेईमानी होगी, वे पूर्ण परंपरा की संवाहिका थी।

भिलाई के गनियारी गांव में जन्मी तीजन बाई का सफर संघर्षों से भरा रहा। समाज से विरोध और बहिष्कार झेलने के बावजूद उन्होंने अपनी कला का साथ नहीं छोड़ा। महज 13 वर्ष की उम्र में मंच पर प्रस्तुति देने वाली तीजन बाई ने उस दौर में परंपराओं को चुनौती दी, जब महिलाओं को केवल बैठकर पंडवानी गाने की अनुमति थी। वे पहली महिला बनीं जिन्होंने खड़े होकर कापालिक शैली में पंडवानी प्रस्तुत की और इस लोककला को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। स्त्रियों को अपने स्वाभिमान और सम्मान को जगाए रखने की प्रेरणा देने वाली तीजन ने इस दिशा में समाज सुधार का वह नमूना पेश किया, जिसकी मिशाल युगों तक दिया जाएगा। भारतीय लोक संस्कृति में उनके अतुलनीय योगदान के लिए उन्हें पद्मश्री, पद्म भूषण और देश के दूसरे सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया। स्कूल की औपचारिक शिक्षा न मिलने के बावजूद उन्हें चार बार डी.लिट. की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया, जो उनकी असाधारण प्रतिभा और योगदान का प्रमाण है। तीजन बाई का जाना केवल एक कलाकार का जाना नहीं, बल्कि भारतीय लोक परंपरा के एक युग का अंत है।एक ऐसी शिक्षिका का अंत है, जिसने अनाचार और अत्याचार के विरुद्ध अपनी आवाज को बुलंद रखने के लिए महाभारत की पृष्ठभूमि में अपने जीवन को खपा दिया। उनकी आवाज, उनकी शैली और उनकी विरासत आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी। कोटि कोटि नमन के साथ भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

-डॉ. शुभदा पांडेय (वरिष्ठ साहित्यकार व शिक्षाविद्)
आगरा-- उत्तरप्रदेश

पतियों की हत्या के बढ़ते मामले

भारत में विवाह को केवल एक सामाजिक अनुबंध नहीं बल्कि विश्वास, समर्पण, सहयोग और आजीवन साथ निभाने का पवित्र बंधन माना गया है। भारतीय संस्कृति में पति और पत्नी को एक दूसरे का पूरक समझा गया है, जो जीवन की हर परिस्थिति में एक दूसरे का साथ निभाते हैं। यही कारण है कि विवाह संस्था सदियों से भारतीय समाज की सबसे मजबूत नींव रही है। किंतु बदलते समय में अनेक ऐसे घटनाक्रम सामने आ रहे हैं जिन्होंने इस विश्वास को गहरी चोट पहुँचाई है। हाल के वर्षों में ऐसे कई मामले सामने आए हैं जिनमें पत्नियों पर अपने ही पतियों की हत्या का आरोप लगा। इन घटनाओं ने समाज को झकझोर दिया है और लोगों को यह सोचने पर मजबूर कर दिया है कि आखिर रिश्तों में ऐसा कौन सा परिवर्तन आ गया है कि जीवनसाथी ही जीवन का सबसे बड़ा शत्रु बनता जा रहा है।

महेन्द्र तिवारी

इस विषय पर चर्चा करते समय तथ्यों की शुद्धता अत्यंत आवश्यक है। उपलब्ध आधिकारिक जानकारी के अनुसार राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो पति की हत्या पत्नी द्वारा किए जाने की अलग राष्ट्रीय श्रेणी प्रकाशित नहीं करता। इसलिए पूरे देश के लिए कोई आधिकारिक संख्या उपलब्ध नहीं है। कुछ स्वतंत्र अध्ययनों और पाँच राज्यों के संकलित मामलों के आधार पर वर्ष 2020 से 2024 के बीच लगभग 785 ऐसे मामले सामने आने का उल्लेख किया गया है, जबकि विशेषज्ञों का अनुमान है कि राष्ट्रीय स्तर पर वास्तविक संख्या इससे अधिक हो सकती है। इन अनुमानों को अंतिम या आधिकारिक आँकड़ा नहीं माना जा सकता, लेकिन इतना अवश्य स्पष्ट है कि ऐसी घटनाएँ समाज के लिए गंभीर चिंता का विषय बन चुकी हैं।

इन घटनाओं का सबसे बड़ा प्रभाव विवाह जैसी पवित्र संस्था पर पड़ता है। विवाह का आधार विश्वास होता है। यदि पति और पत्नी के बीच विश्वास समाप्त हो जाए तो केवल एक परिवार ही नहीं टूटता बल्कि समाज की मूल संरचना भी कमजोर होने लगती है। जब लोग यह सुनते हैं कि किसी पत्नी ने अपने पति की हत्या कर दी या किसी पति ने अपनी पत्नी की हत्या कर दी, तो उनके मन में विवाह के प्रति भय और असुरक्षा की भावना उत्पन्न होती है। युवा पीढ़ी के सामने विवाह का आदर्श स्वरूप धुंधला पड़ने लगता है और यह धारणा बनने लगती है कि वैवाहिक जीवन अब पहले जैसा सुरक्षित और स्थिर नहीं रहा।

अधिकांश मामलों का अध्ययन बताता है कि ऐसे अपराध किसी एक कारण से नहीं होते। कई मामलों में विवाहेतर संबंध, पारिवारिक विवाद, आर्थिक तनाव, संपत्ति का विवाद, लंबे समय से चला आ रहा वैवाहिक तनाव, आपसी अविश्वास और प्रतिशोध जैसी परिस्थितियाँ सामने आती हैं। राष्ट्रीय स्तर पर हत्या के मामलों के उद्देश्यों में भी पारिवारिक विवाद, व्यक्तिगत दुश्मनी, प्रेम संबंध और अवैध संबंध महत्वपूर्ण कारणों में शामिल पाए गए हैं। इससे स्पष्ट होता है कि परिवार के भीतर पैदा होने वाले विवाद यदि समय रहते नहीं सुलझाए जाएँ तो वे कभी-कभी अत्यंत हिंसक रूप धारण कर सकते हैं।

यह भी समझना आवश्यक है कि हर वैवाहिक विवाद हत्या में परिवर्तित नहीं होता। अधिकांश परिवार कठिन परिस्थितियों के बावजूद बातचीत, समझौते, पारिवारिक सहयोग और कानूनी उपायों के माध्यम से अपने मतभेद सुलझा लेते हैं। इसलिए कुछ जघन्य घटनाओं के आधार पर पूरे समाज या किसी एक लिंग के प्रति नकारात्मक धारणा बनाना उचित नहीं होगा। अपराधी का मूल्यांकन उसके अपराध के आधार पर होना चाहिए, उसके लिंग के आधार पर नहीं। इन घटनाओं का सबसे अधिक दुष्प्रभाव बच्चों पर पड़ता है। जब किसी परिवार में एक अभिभावक की हत्या हो जाती है और दूसरा जेल चला जाता है, तब बच्चे एक साथ माता और पिता दोनों का सहारा खो देते हैं। उनके सामने आर्थिक, सामाजिक और मानसिक

संकट खड़ा हो जाता है। वे लंबे समय तक भय, अवसाद, असुरक्षा और सामाजिक उपेक्षा का सामना करते हैं। अनेक मनोवैज्ञानिक अध्ययन बताते हैं कि बचपन में इस प्रकार का आघात व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावित कर सकता है। ऐसे बच्चे पढ़ाई, सामाजिक संबंधों और मानसिक स्वास्थ्य में गंभीर कठिनाइयों का सामना कर सकते हैं।

समाज के स्तर पर भी इन घटनाओं के दूरगामी परिणाम दिखाई देते हैं। जब परिवारों के भीतर हिंसा बढ़ती है तो सामाजिक विश्वास कमजोर होता है। पड़ोसी, रिश्तेदार और मित्र भी वैवाहिक संबंधों को संदेह की दृष्टि से देखने लगते हैं। समाज में अविश्वास का वातावरण बनने लगता है। यह स्थिति केवल पति पत्नी तक सीमित नहीं रहती बल्कि अगली पीढ़ी तक पहुँचती है। बच्चे वही सीखते हैं जो वे अपने आसपास देखते हैं। यदि वे हिंसा, धोखे और प्रतिशोध को सामान्य व्यवहार के रूप में देखने लगेंगे तो समाज में संवेदनशीलता और सहिष्णुता का स्तर लगातार घटेगा।

आज का डिजिटल युग भी रिश्तों को नई चुनौतियाँ दे रहा है। सोशल मीडिया ने लोगों को अभूतपूर्व संवाद के अवसर दिए हैं, लेकिन इसके साथ ही कई नई समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं। कभी-कभी आभासी संबंध वास्तविक संबंधों पर भारी पड़ने लगते हैं। पति पत्नी के बीच संवाद कम होता जाता है और गलतफहमियाँ बढ़ती जाती हैं। कई बार छोटी बातों को समय रहते सुलझाया नहीं जाता, जिससे तनाव गहराता जाता है। यह कहना उचित नहीं होगा कि केवल सोशल मीडिया ही अपराधों का कारण है, लेकिन यह स्वीकार करना होगा कि यदि इसका उपयोग संयम और जिम्मेदारी से न किया जाए तो यह पारिवारिक संबंधों पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।

भौतिकवादी जीवनशैली भी एक महत्वपूर्ण चुनौती बनकर उभरी है। आज सफलता और आर्थिक उपलब्धि को जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य माना जाने लगा है। व्यस्त जीवन के कारण परिवार के सदस्यों के पास एक दूसरे के लिए समय कम होता जा रहा है। संवाद की कमी धीरे-धीरे भावनात्मक दूरी में बदल जाती है। जब मन की बातें साझा नहीं होतीं, तब संदेह, क्रोध और असंतोष जन्म लेते हैं। यदि इनका समाधान समय रहते न किया जाए तो वे गंभीर विवाद का रूप ले सकते हैं।

यह भी ध्यान रखना चाहिए कि भारत में घरेलू हिंसा और वैवाहिक अपराधों के शिकार पुरुष और महिलाएँ दोनों होते हैं। महिलाओं के विरुद्ध घरेलू हिंसा, दहेज मृत्यु और क्रूरता के मामले भी बड़ी संख्या में दर्ज होते हैं। इसलिए समाधान किसी एक पक्ष को दोषी ठहराने में नहीं बल्कि पूरे परिवार और समाज में स्वस्थ संबंधों की संस्कृति विकसित करने में है।

लड़कियों पर नशे का बढ़ता प्रभाव: एक गंभीर सामाजिक मुद्दा

आज के बदलते सामाजिक परिवेश में नशाखोरी एक गंभीर चुनौती के रूप में उभर रही है। पहले नशे की समस्या को मुख्य रूप से पुरुषों तक सीमित माना जाता था, लेकिन अब लड़कियों और युवतियों में भी नशे का बढ़ता प्रभाव समाज के लिए चिंता का विषय बन गया है। यह केवल स्वास्थ्य संबंधी समस्या नहीं है, बल्कि इसका असर परिवार, शिक्षा, सामाजिक संबंधों और राष्ट्र के भविष्य पर भी पड़ता है।

आधुनिक जीवनशैली, बढ़ती प्रतिस्पर्धा और बदलती सामाजिक मान्यताओं ने युवाओं के जीवन को पहले की अपेक्षा अधिक जटिल बना दिया है। पढ़ाई, करियर, सामाजिक अपेक्षाओं और व्यक्तिगत जीवन के दबाव के बीच कई लड़कियां मानसिक तनाव और असुरक्षा का सामना करती हैं। कुछ मामलों में वे इन चुनौतियों से बचने के लिए नशे को एक अस्थायी सहारे के रूप में देखने लगती हैं, जबकि वास्तव में यह समस्या को और अधिक गंभीर बना देता है।

डॉ विजय गर्ग
सेवानिवृत्त प्रिंसिपल
मलोट पंजाब

साथियों का प्रभाव भी नशे की बढ़ती प्रवृत्ति का एक प्रमुख कारण है। किशोरावस्था और युवावस्था में मित्रों के साथ सामंजस्य बनाए रखने की इच्छा बहुत प्रबल होती है। कई बार युवा लड़कियां अपने मित्र समूह में स्वीकार्यता पाने या आधुनिक दिखने के लिए नशे का प्रयोग करने लगती हैं। धीरे-धीरे यह प्रयोग आदत और फिर लत में बदल सकता है।

सोशल मीडिया और मनोरंजन उद्योग का प्रभाव भी इस संदर्भ में महत्वपूर्ण है। फिल्मों, वेब सीरीज और कुछ ऑनलाइन सामग्री में नशे को कभी-कभी आकर्षक, आधुनिक या तनाव दूर करने के साधन के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। यद्यपि इसका उद्देश्य मनोरंजन होता है, लेकिन इसका प्रभाव संवेदनशील और कम उम्र के दर्शकों पर पड़ सकता है। इसलिए मीडिया साक्षरता और सही मार्गदर्शन की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है।

नशे का प्रभाव केवल शारीरिक स्वास्थ्य तक सीमित नहीं रहता। इससे मानसिक स्वास्थ्य पर भी गहरा असर पड़ता है। स्मरण शक्ति कमजोर हो सकती है, एकाग्रता में कमी आ सकती है और आत्मविश्वास प्रभावित हो सकता है। लंबे समय तक नशे की आदत विभिन्न बीमारियों, अवसाद और सामाजिक अलगाव का कारण बन सकती है। इसके अलावा, शिक्षा और करियर पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जिससे भविष्य की संभावनाएं सीमित हो सकती हैं। परिवार इस समस्या की रोकथाम में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। माता-पिता को अपनी बेटियों के साथ खुलकर संवाद करना चाहिए और उनकी भावनाओं, समस्याओं तथा चिंताओं को समझने का प्रयास करना चाहिए। केवल अनुशासन और नियंत्रण पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि विश्वास, सहयोग और भावनात्मक समर्थन भी उतने ही आवश्यक हैं। जब बच्चे अपने परिवार के साथ सहज महसूस करते हैं, तो वे कठिन परिस्थितियों में गलत रास्ते पर जाने की संभावना से बच सकते हैं। विद्यालयों और महाविद्यालयों की भी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। शिक्षा संस्थानों में नशे के दुष्प्रभावों के बारे में जागरूकता कार्यक्रम, परामर्श सेवाएं और जीवन कौशल शिक्षा को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। खेल, कला, साहित्य और सामाजिक गतिविधियों में भागीदारी युवाओं को सकारात्मक दिशा प्रदान कर सकती है और उनमें आत्मविश्वास तथा नेतृत्व क्षमता का विकास कर सकती है।

सरकार और समाज को भी इस दिशा में सक्रिय भूमिका निभानी होगी। नशा मुक्ति अभियान, मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार, पुनर्वास केंद्रों की उपलब्धता और जनजागरूकता कार्यक्रम इस समस्या के समाधान में सहायक हो सकते हैं। साथ ही, नशे की लत से जूझ रही लड़कियों को सामाजिक कलंक का शिकार बनाने के बजाय उन्हें सहानुभूति, उपचार और पुनर्वास का अवसर देना चाहिए।

यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि अधिकांश लड़कियां स्वस्थ और सकारात्मक जीवन जी रही हैं तथा समाज के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। इसलिए इस विषय पर चर्चा करते समय किसी प्रकार की सामान्यीकरण या पूर्वाग्रह से बचना चाहिए। उद्देश्य केवल संभावित खतरों के प्रति जागरूकता बढ़ाना और समय रहते उचित कदम उठाना होना चाहिए।

अंततः, लड़कियों पर नशे का बढ़ता प्रभाव एक गंभीर सामाजिक मुद्दा है, जिसका समाधान सामूहिक प्रयासों से ही संभव है। परिवार, विद्यालय, समाज और सरकार यदि मिलकर सकारात्मक वातावरण तैयार करें, तो युवा पीढ़ी को नशे जैसी बुराइयों से दूर रखा जा सकता है। स्वस्थ, शिक्षित और आत्मविश्वासी युवतियां ही एक सशक्त और प्रगतिशील समाज की आधारशिला होती हैं।

हरित परिवहन की दिशा में भारत की ऐतिहासिक छलांग

जींद से देश को मिलेगी पहली हाइड्रोजन ट्रेन

भारतीय रेलवे के इतिहास में एक बड़ा मील का पत्थर साबित होने जा रहा है। भारत अब जर्मनी, जापान, दक्षिण कोरिया, कनाडा, फ्रांस, स्वीडन के बाद हाड़्रोजन ट्रेन वाला आठवां देश बन जायेगा जिसका परीक्षण भी सफलतापूर्वक पूरा हो चुका है। हरियाणा के विकास को गति देने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आगामी 17 जुलाई को हरी झंडी दिखाकर राष्ट्र को समर्पित करेंगे। यह केवल एक नई रेल सेवा की शुरुआत नहीं, बल्कि भारत के हरित भविष्य, ऊर्जा आत्मनिर्भरता और तकनीकी क्षमता का प्रतीक भी है। हाइड्रोजन ट्रेन के संचालन के साथ भारत विश्व के उन चुनिंदा देशों की श्रेणी में शामिल हो जाएगा जिन्होंने स्वच्छ ईंधन आधारित रेल परिवहन को अपनाया है। जर्मनी, जापान, दक्षिण कोरिया, कनाडा, फ्रांस और स्वीडन जैसे विकसित देशों के बाद भारत हाइड्रोजन ट्रेन तकनीक अपनाने वाला आठवां देश बनने जा रहा है। यह उपलब्धि भारत की बढ़ती तकनीकी दक्षता और नवाचार क्षमता को वैश्विक स्तर पर स्थापित करेगी।

सौरभ वार्ष्णेय

क्या है हाइड्रोजन ट्रेन?

हाइड्रोजन ट्रेन ऐसी रेलगाड़ी होती है जो डीजल के स्थान पर हाइड्रोजन ईंधन का उपयोग करती है। इसमें हाइड्रोजन फ्यूल सेल तकनीक के माध्यम से बिजली उत्पन्न की जाती है, जिससे ट्रेन संचालित होती है। इस प्रक्रिया में ऊर्जा उत्पादन के दौरान कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन नहीं होता, बल्कि केवल जलवाष्प और पानी निकलता है। यही कारण है कि इसे पर्यावरण के अनुकूल और भविष्य की परिवहन प्रणाली माना जा रहा है।

विश्व भर में बढ़ते प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता को कम करने के लिए हाइड्रोजन ऊर्जा को एक महत्वपूर्ण विकल्प के रूप में देखा जा रहा है। भारतीय रेलवे भी वर्ष 2030 तक नेट-ज़ीरो कार्बन उत्सर्जन का लक्ष्य लेकर आगे बढ़ रहा है, जिसमें हाइड्रोजन ट्रेनें महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी।

भारतीय रेलवे के लिए ऐतिहासिक उपलब्धि

देश की पहली हाइड्रोजन ट्रेन के कोच चेन्नई स्थित इंटीग्रल कोच फैक्टरी (आईसीएफ) में तैयार किए गए हैं। इस परियोजना का सफल परीक्षण भी पूरा हो चुका है, जिससे इसके सुरक्षित और प्रभावी संचालन का मार्ग प्रशस्त हुआ है। रेलवे विशेषज्ञों के अनुसार हाइड्रोजन ट्रेन पारंपरिक डीजल ट्रेनों की तुलना में अधिक पर्यावरण-अनुकूल होने के साथ-साथ कम शोर उत्पन्न करती है। इसके संचालन से ईंधन आयात पर निर्भरता कम होगी और स्वदेशी तकनीक को भी बढ़ावा मिलेगा। यह परियोजना प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ग्रीन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत के विजन को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है।

हरियाणा के विकास को मिलेगा नया आयाम

जींद से हाइड्रोजन ट्रेन के संचालन का निर्णय हरियाणा के लिए भी विशेष महत्व रखता है। इससे प्रदेश की औद्योगिक, आर्थिक और तकनीकी पहचान को नई मजबूती मिलेगी। रेलवे अवसंरचना के विकास से क्षेत्र में निवेश की संभावनाएँ बढ़ेंगी, रोजगार के अवसर सृजित होंगे तथा स्थानीय अर्थव्यवस्था को गति मिलेगी। हरियाणा पहले से ही ऑटोमोबाइल, विनिर्माण और कृषि क्षेत्र में अग्रणी राज्यों में शामिल है। अब स्वच्छ ऊर्जा आधारित परिवहन प्रणाली के जुड़ने से राज्य आधुनिक तकनीक और हरित विकास का केंद्र बन सकता है।

पर्यावरण संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम

वर्तमान समय में प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन पूरी दुनिया के लिए गंभीर चुनौती बने हुए हैं। परिवहन क्षेत्र कार्बन उत्सर्जन का एक बड़ा स्रोत है। ऐसे में हाइड्रोजन आधारित रेल सेवाएं पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती हैं।

हाइड्रोजन ट्रेनें न केवल वायु प्रदूषण को कम करेंगी, बल्कि ध्वनि प्रदूषण में भी कमी लाएंगी। इनके व्यापक उपयोग से जीवाश्म ईंधनों की खपत घटेगी और ऊर्जा सुरक्षा को भी मजबूती मिलेगी।

वैश्विक मंच पर भारत की बढ़ती प्रतिष्ठा

हाइड्रोजन ट्रेन का सफल संचालन भारत की तकनीकी क्षमता और अनुसंधान कौशल का परिचायक है। आज भारत केवल प्रौद्योगिकी का उपभोक्ता नहीं, बल्कि नवाचार और आधुनिक समाधानों का निर्माता भी बनकर उभर रहा है। सेमीकंडक्टर, अंतरिक्ष विज्ञान, डिजिटल प्रौद्योगिकी और नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में निरंतर प्रगति के बाद हाइड्रोजन ट्रेन परियोजना भारत की उपलब्धियों में एक और महत्वपूर्ण अध्याय जोड़ने जा रही है। यह पहल विश्व समुदाय को भी यह संदेश देती है कि भारत आर्थिक विकास के साथ-साथ पर्यावरणीय दायित्वों के प्रति भी समान रूप से प्रतिबद्ध है।

जींद से देश की पहली हाइड्रोजन ट्रेन का शुभारंभ भारतीय रेलवे के इतिहास में स्वर्णिम अध्याय के रूप में दर्ज होगा। यह केवल एक रेल परियोजना नहीं, बल्कि स्वच्छ ऊर्जा, तकनीकी आत्मनिर्भरता और सतत विकास के भारत के संकल्प का प्रतीक है। आने वाले समय में यदि हाइड्रोजन तकनीक का विस्तार व्यापक स्तर पर होता है, तो भारत न केवल परिवहन क्षेत्र में क्रांति ला सकेगा, बल्कि वैश्विक हरित अर्थव्यवस्था में भी अग्रणी भूमिका निभा सकेगा। 17 जुलाई का दिन भारतीय रेलवे और हरियाणा दोनों के लिए ऐतिहासिक उपलब्धि का साक्षी बनने जा रहा है।

घर में करें दही फेसिअलः शहनाज हुसैन

घरेलू नुस्खों में दही का इस्तेमाल सदियों से चला आ रहा है / दही हमारी सेहत के साथ साथ त्वचा के लिए भी काफी फायदेमन्द माना जाता है / आजकल बरसात के दौरान जब आप दही खाना कम कर देते हैं तो बेहतर होगा इसका इस्तेमाल त्वचा निखारने के लिए किया जाये /

दही सेहत के साथ साथ त्वचा के लिए भी काफी फायदेमन्द माना जाता है / दही में मौजूद लैक्टिक एसिड त्वचा को निखारता है और इंस्टेंट ग्लो लाता है , स्किन को टाइट करता है और टैनिंग को कम करता है / चेहरे पर दही लगाने से त्वचा मुलायम और चमकदार बनती है / दही प्रोटीन , कैल्सियम और विटामिन जैसे पौषक तत्वों से भरपूर होता है जो त्वचा के लिए फायदेमंद माने जाते हैं।

दही को फेस क्लीन्ज़र के तौर पर इस्तेमाल करने से चेहरे पर जमा धूल ,मिट्टी और एक्स्ट्रा ऑयल हट जाता है / इसके लिए आप कांच की कटोरी में दो चमच्च गाढ़े दही में दो चमच्च गुलाब जल मिलाकर अच्छी तरह मिक्स कर लें / इस मिश्रण से अपने चेहरे की आहिस्ता आहिस्ता मसाज करें और बाद में चेहरे को ताजे साफ़ पानी से धो डालें /

एक कटोरे में दो चमच्च दही लें / इसमें एक चमच्च बेसन , एक चुटकी दही और एक चुटकी नींबू का रस डालकर अच्छी तरह मिक्स कर लें / इस मिश्रण को चेहरे पर लगाने के बाद प्रकृतिक तौर पर सूखने दें और इसके बाद साफ ताजे पानी से धो डालें / इस फेसिअल को लगाने से आपकी त्वचा पर प्रकृतिक निखार आएगा।

1 चम्मच दही, 1 चम्मच एलोवेरा जेल और कुछ बूंदे गुलाब जल की मिलाकर अच्छे से मिक्स करें और चेहरे पर लगाएं। इस पैक को कुछ मिनट तक चेहरे पर रखें और फिर ठंडे पानी से चेहरा धो लें।/ यह फेस पैक त्वचा की प्रकृतिक आभा बनाये रखता है / त्वचा में दाग ,धब्बे और पिंपल्स नहीं होते / कांच के एक कटोरे में पांच चमच्च दही में दो चमच्च बादाम तेल मिलकर इसे अच्छी तरह फेंट लें ताकि यह क्रीम की तरह बन जाये / इस क्रीम से अपने चेहरे , कंधे और गर्दन पर आहिस्ता आहिस्ता मसाज करें / अब एक गिलास गर्म पानी में सूती रुमाल भिगोकर कर इसे क्लीन कर लें/ इससे आपकी त्वचा को पौषण मिलेगा और त्वचा में ताजगी महसूस होगी/ एक कटोरी में आधा कप फीका दही , एक बड़ा चमच्च शहद , एक चमच्च नींबू का रस , 1 /4 चमच्च हल्दी पाउडर,को मिलाकर एक चिकना पेस्ट बना लें / इस पेस्ट को उँगलियों की मदद से आँखों को छोड़ कर चेहरे और गर्दन पर लगाएं और 15 -20 मिनट बाद गुनगुने पानी से धो डालें और त्वचा को थपथपा कर सूखा लें /

अगर आपकी त्वचा तैलीय है तो एक बाउल में एक चमच्च बेसन और एक चमच्च दही को मिलकर गाढ़ा पेस्ट तैयार कर लें /

इस गाढ़े पेस्ट में दो बूंद नींबू और एक चुटकी हल्दी पाउडर मिलाएं। इस मिश्रण को साफ किए हुए चेहरे और गर्दन पर समान रूप से लगाएं। इस फेस पैक को प्रकृतिक तौर पर सूखने दें / इस सूखे पैक को चेहरे और गर्दन से हटाने के लिए गुनगुना पानी लगाएं

20 मिनट से 30 मिनट के बाद, सूखे फेस पैक को हल्का गीला करने के लिए उस पर गर्म पानी लगाएं ।इसके बाद हल्के हाथों से रगड़ कर पैक को हटा लें / इस तरह रगड़ने से आपकी त्वचा के डेड सेल्स निकल जाएंगे। बाकी के फेस पैक को हटाने के लिए ठंडे पानी का इस्तेमाल करें।

फेसिअल से पहले क्लींजिंग, स्क्रबिंग, मसाज जरूरी होती है /

फेशियल के बाद चेहरे की मॉइश्चराइजिंग और टोनिंग करना भी काफी जरूरी होता है। अगर आपकी ड्राई स्किन है, तो आप एलोवेरा जेल या कोई मॉइश्चराइजर लगा लें। अगर आपकी ऑयली स्किन है, तो आप टोनिंग के लिए गुलाब जल का इस्तेमाल कर सकती हैं। दही फेशियल से त्वचा में प्रकृतिक ग्लो बढ़ता है, स्किन में लंबे समय तक नमी बनी रहती है, सनटैन और सनबर्न से बचाव होता है, झाइयां, पिंपल और ऐक्ने की समस्या कम हो सकती है, झुर्रियों और एजिंग के संकेत देर से नजर आते हैं/ हर स्किन टाइप के लोग इसका उपयोग कर सकते हैं। फेशियल के बाद धूप में निकलते समय सनस्क्रीन लगाना न भूलें।

लेखिका अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सौन्दर्य विशेषज्ञ हैं और हर्बल क्वीन के रूप में लोकप्रिय हैं

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुजरात में सेमीकंडक्टर प्लांट का उद्घाटन किया

पीएम ने कहा- यहां हर साल 20 करोड़ चिप बनेंगी

5 महीने में तीसरा प्लांट शुरू

पीएम नरेंद्र मोदी ने शनिवार को गुजरात के साणंद में देश के तीसरे सेमीकंडक्टर प्लांट का उद्घाटन किया। साणंद में स्थित सीजी सेमी के ओएसएटी प्लांट में आज से प्रोडक्शन शुरू हो गया है। पीएम ने कहा कि इस प्लांट में हर साल 20 करोड़ चिप बनेंगी। यहां पर हर साल 500 करोड़ चिप बनाने का लक्ष्य रखा गया है। भारत आज दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मोबाइल मैन्युफैक्चरर और एक्सपोर्ट करने वाला देश है। हम मोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स प्रोडक्ट के साथ वह चिप भी बनाएंगे जिनसे पूरी दुनिया चलती है। उन्होंने कहा कि 20 साल पहले मैंने गुजरात में सेमीकंडक्टर प्लांट लगाने के लिए पूरी प्लानिंग बनाई। उस समय की केंद्र सरकार बड़े बयान दे रही थी तो कई कंपनियां आईं भी लेकिन केंद्र सरकार को उस समय क्या हो गया, उनके पैरों में बेड़ियां लग गईं और बात आगे नहीं बढ़ पाई।

5 महीने में तीन प्लांट शुरू : केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि सेमीकंडक्टर क्षेत्र में काम तेजी से आगे बढ़ रहा है। उन्होंने बताया कि पहला प्लांट 28 फरवरी को, दूसरा 31 मार्च को और तीसरा प्लांट 4 जुलाई को शुरू हो रहा है। इतने कम समय में तीन बड़े प्लांट शुरू होना भारत के लिए बड़ी उपलब्धि है।

पेट्रोल में एथेनॉल मिलाना जांची-परखी साइंटिफिक प्रोसेस : सरकार

इसमें ग्लोबल प्रैक्टिस अपनाई, टॉप एजेंसियां भी कर चुकीं हैं टेस्ट

पेट्रोल में एथेनॉल मिलाने को लेकर हो रहे विरोध के बीच सरकार ने कहा कि एथेनॉल ब्लेंडिंग का काम रातों-रात नहीं हुआ। यह एक जांची-परखी, साइंटिफिक और स्टेप-बाय-स्टेप प्रोसेस है। इसे पेट्रोल में मिलाने की ग्लोबल प्रैक्टिस अपनाई है और टॉप एजेंसियां भी इसका टेस्ट कर चुकीं हैं।

एथेनॉल ब्लेंडिंग पर दिल्ली में हुई इंडस्ट्री एक्सपर्ट्स की प्रेस कॉन्फ्रेंस में सरकार की ओर से शामिल एक्सपर्ट वर्तिका शुक्ला ने यह बात कही। वर्तिका शुक्ला ने बताया कि देश में साल 2013 और 2014 के दौरान पेट्रोल में सिर्फ 1.5% एथेनॉल मिलाया जा रहा था। अब इस प्रोग्राम के तहत पेट्रोल में 20% एथेनॉल ब्लेंडिंग की जा रही है। 20% एथेनॉल ब्लेंडिंग के टारगेट को तय समय से पांच साल पहले यानी दिसंबर 2025 तक ही पूरा कर लिया गया है।

टॉप एजेंसियां इसकी टेस्टिंग कर चुकीं : एक्सपर्ट शुक्ला ने बताया कि विशेष रूप से साल 2018 में एथेनॉल ब्लेंडिंग प्रोग्राम को एक स्ट्रक्चर्ड यानी व्यवस्थित तरीके से सभी स्टेकहोल्डर्स के सामने चर्चा और विचार-विमर्श के लिए रखा गया था। यह पूरा प्रोग्राम साइंटिफिक एविडेंस पर बेस्ड है। एथेनॉल ब्लेंडिंग प्रोग्राम को ऑटोमोटिव मैन्युफैक्चरर्स और उन्हें सपोर्ट करने वाली मुख्य एजेंसियों का पूरा सपोर्ट है।

ऑटोमोटिव रिसर्च एसोसिएशन ऑफ इंडिया और सियाम जैसी टॉप एजेंसियां इसकी बड़े लेवल पर टेस्टिंग कर चुकी हैं। वर्तिका शुक्ला के अनुसार, पेट्रोल में एथेनॉल मिलाने का यह प्रोग्राम दुनिया भर में अपनाई जाने वाली ग्लोबल बेस्ट प्रैक्टिसेस के बिल्कुल अनुरूप है। इसके जरिए फॉसिल फ्यूल यानी जीवाश्म ईंधन को 'ग्रीन' बनाया जा रहा है, ताकि पर्यावरण में कार्बन उत्सर्जन को काफी हद तक कम किया जा सके।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामया

दीपाली वार्ष्णेय अग्रवाल
सुजोक थेरेपिस्ट,
नेचरोपैथी

बाल

रूखे और बेजान बालो को सही करने के लिए अलसी के बीज और देना मेथी को पानी में उबालें उस पानी को छानकर उसमे त्रिफला चूर्ण या आंवले का चूर्ण मिलाएं, साथ ही थोड़ा नारियल का तेल या केस्टर आयल मिलाएं, फिर इसको बालों में लगा लें एक घंटे बाद सिर धो लें, ऐसा हफ्ते में दो बार करें। इससे बालों को नरिशमेंट मिलेगा, बाल सॉफ्ट और चमकदार होंगे।

नागरमोथा

ये एक आयुर्वेदिक औषधि हैं, ये वात और पित्त दोनों ठीक करती है, लूज़ मोशन, पेट में आँव होना, स्किन एलर्जी, जिन माताओ को दूध कम

आता हो, या किसी कारण दूध बच्चे को ना पचता हो, यूरिन इन्फेक्शन, सभी मे ये बहुत लाभकारी है। इसको पाउडर बनाकर आधा चम्मच एक बड़े कप पानी मेँ उबालें, दो चुटकी सोंठ पाउडर डालें, काढ़ा बनाकर सुबह पियें। ये दीपनपाचन करता है, जठरागनी सही करके पाचन सही करता है।

गोंद कतीरा

गर्मियों मेँ भूख बढ़ाने के लिए, पाचन सही रखने के लिए, यूरिन इन्फेक्शन, यूरिन मेँ जलन या कम आना, इन सभी मेँ गोंदकतीरा बहुत फायदेमंद है, इसको बनाने के लिए एक जार मेँ कुछ पत्ते पुदीना, एक से दो चम्मच भीगा हुआ गोंद कतीरा, काला नमक, नींबू, और थोड़ा गुड़ डालकर पीस लें, फिर मटके का ठंडा पानी मिलाकर पिए।

बार बार यूरिन आने की समस्या (बहुमूत्र)

बहुमूत्र रोग बार बार यूरिन आना,ये रोग बच्चों और बुजुर्गों में अधिक होता है। इस रोग मे, कब्ज हो जाती है शरीर दुर्बल होने लगता है।कमर और कमर के नीचे हिस्से में दर्द होता है।

आँवले के चूर्ण में गुड़ मिलाकर दिन में दो बार लेने से लाभ होता है।

काले तिल, अजवाइन को मिलाकर पाउडर बना लें, इस पाउडर को गुड़ के साथ खाने मे फायदा होता है।

सुबह खाली पेट एक चम्मच अदरक का रस लेने से भी ये समस्या खत्म होती है।

पतले गाय के दूध में 4 छुआरे उबालकर रात को सोने से पहले खाने से भी आराम मिलता है।

कब्ज

- कब्ज होने के मुख्य कारण
- रूखा खाना खाना
- पाचन शक्ति कमज़ोर होना
- पानी की कमी
- शारीरिक व्यायाम की कमी
- नकारात्मक सोच
- खाना हमेशा रसेदार सब्जी दाल के साथ खाना चाहिए
- खाने के बाद 45 मिनिट तक पानी नहीं पीना चाहिए
- कब्ज दूर करने के लिए ज्यादा पानी पीना ही पर्याप्त नहीं बल्कि जिनमे ज्यादा पानी और फाइबर हो ऐसा भोजन करना चाहिए-

जैसे सलाद और फल
व्यायाम और प्राणायाम रोज करें।
सोच सकारात्मक रखें
सुपाच्य भोजन करें।

वेट बढ़ाना

अगर किसी को वेट बढ़ाना है तो सुबह खाली पेट एक नारियल का पानी लें, उसमें रातभर भीगा गोंद कतीरे के दो चम्मच डालें, साथ ही एल चम्मच गुलकंद डालकर मिक्सी में चला लें, फिर इसे धीरे धीरे पियें।

अति भोजनमः रोग मूलम

मतलब ज्यादा भोजन करना हमेशा ही नुकसानदायक रहता है।

हमारे शरीर मे 72 प्रतिशत पानी है अत: अन्न और पानी का इसी प्रकार सन्तुलन बनाये रखें। हमारे खाने में 40 प्रतिशत भाग कच्चे फल और सब्जियों का होना चाहिए।

आयुर्वेद मैं कहा जाता है कि हम मरा हुआ भोजन अर्थात खूब पकाया हुआ भोजन ग्रहण करते हैं और उस भोजन से उत्तम स्वस्थ की कामना रखते हैं, ये कैसे संभव है।

सदस्यता फार्म

राजस्थान की आवाज...

राजस्थान दर्शन

हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रधान कार्यालय

A-11, प्रथम मंजिल, करधनी शोपिंग सेन्टर, हरि मार्ग,
मालवीय नगर, जयपुर-302017
फोन.: 0141-2521000, मो.: 9413840652-53
7737275324, 9667669888
E-mail: rajasthandarshanpartika@gmail.com

मैं राजस्थान दर्शन पत्रिका का निम्न अवधि के लिए सदस्य बनना चाहता/चाहती हूँ।

अवधि	शुल्क
वार्षिक	540/-
5 वर्ष	2500/-
10 वर्ष	5100/-
आजीवन	10,000/-

नाम ....

पता ....

....

....

फोन (निवास)..

(ऑफिस)...

मोबाइल ....

ई-मेल ....

वेबसाइट ....

....

मै मैसर्स ....

राजस्थान दर्शन हिन्दी मासिक पत्रिका का वार्षिक/पांच वर्ष/दस वर्ष के लिए सदस्य बनना चाहता हूँ। नकद अथवा चैक/डी.डी.नं.

....

अदाकर्ता बैंक ....

दिनांक .... रू. का संलग्न है।

वास्ते अधिकृत हस्ताक्षर (मय सील)

कृपया चैक/डी.डी. ''राजस्थान दर्शन'' के नाम से बनावें।

विज्ञापन दरें

राजस्थान की आवाज...

राजस्थान दर्शन

हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रधान कार्यालय

A-11, प्रथम मंजिल, करधनी शोपिंग सेन्टर, हरि मार्ग,
मालवीय नगर, जयपुर-302017
फोन.: 0141-2521000, मो.: 9413840652-53
7737275324, 9667669888
E-mail: rajasthandarshanpartika@gmail.com

विज्ञापन दरें

अंतिम कवर मल्टी कलर	51,000/-
दूसरा कवर मल्टी कलर	20,000/-
पूर्ण पृष्ठ मल्टी कलर	15,000/-
आधा पृष्ठ मल्टी कलर	8,000/-
पूर्ण पृष्ठ श्याम श्वेत कलर	10,000/-
आधा पृष्ठ श्याम श्वेत कलर	6,000/-
एक चाथाई पृष्ठ श्याम श्वेत	3000/-

मैं ....अपनी फर्म मैसर्स .... का विज्ञापन राजस्थान दर्शन हिन्दी मासिक पत्रिका में साईज ....के लिये देना चाहता हूँ। नकद अथवा चैक/ डि.डी.नं. ....

अदाकर्ता बैंक ....

दिनांक ....राशि ....

रूपये का संलग्न है।

वास्ते अधिकृत हस्ताक्षर (मय सील)

कृपया चैक/डी.डी. ''राजस्थान दर्शन'' के नाम से बनावें।

श्री जैकलजी आई माता
सेवा समिति के तत्वाधान में नारलाई धाम में गुरुपूर्णिमा
महोत्सव आप सभी गुरुभक्त एवं श्रद्धालु को
भावभरा आमंत्रण
आने वाले दर्शनार्थ यात्रियों के लिए निःशुल्क भोजन एवं ठहरने की उत्तम व्यवस्था
सुंदरकांड का पाठ
27 जुलाई 2026, सोमवार, शाम 6:15 बजे से
दिव्य देव पहाड़ परिक्रमा
28 जुलाई 2026, मंगलवार, सुबह 7:15 बजे से
भजन संध्या
28 जुलाई 2026, मंगलवार, शाम 8:15 बजे से
चामुण्डा साउण्ड
रानी (पाली)
भजन कलाकार : महावीर सांखला एण्ड पार्टी, नागौर
मंच संचाजलक : धीसुलाल जी सीरवी, बिजोवा
मु.पो. नारलाई, तह. देसूरी, जिला-पाली (राज.) मो. 9414391476
श्री जैकल जी आईमाता सेवा समिति एवं समस्त गुरुभक्त व समस्त सीरवी समाज, नारलाई

डाक प्रेषण तिथिः प्रत्येक माह की 2 तारीख
RNI No.- RAJHIN/2013/52435
डाक पंजीकरण संख्या : Jaipur City/414/2022-24

प्रकाशन तिथि : 01 जुलाई, 2026
पृष्ठ संख्या : 40

ब्रह्मलीन महन्त

श्री श्री 1008 श्री पीताम्बर नाथ जी (पोमजी महाराज)

श्री बाबा रामदेव जी मठ- खन्दरा,
तह. शिवगंज, जिला- सिरोही (राज.) में

29 जुलाई को गुरू पुर्णिमा महोत्सव में आप सभी गुरु भक्त एवं श्रद्वालु आमंत्रित हैं

ब्रह्मलीन महन्त
श्री श्री 1008 श्री पीताम्बर नाथ जी
(पोमजी महाराज)

बाबा रामदेव आश्रम के मठाधीश रामनाथ महाराज को भूटान के थिंपू में योग दिवस पर भारत-भूटान शांति अवॉर्ड से सम्मानित किया गया।कार्यक्रम अंतर्राष्ट्रीय समरसता मंचइंडो नेपाल के तत्वाधान में हुआ।

गादिपति श्री श्री 1008 श्री रामनाथ जी
महाराज

निवेदक : —

गादिपति श्री श्री 1008 श्री रामनाथ जी महाराज

समस्त ग्रामवासी, खन्दरा (जिला- सिरोही)

प्रतिष्ठा में
....
....
....

राजस्थान की आवाज ...
राजस्थान दर्शन
पता न मिलने पर पुनः इस पते पर भेजे
प्रधान कार्यालयः ए-11, प्रथम मंजिल,
करधनी शॉपिंग सेन्टर, मालवीय नगर, जयपुर-302017
फोन नं. : 0141-4819957